सोवियत विद्यार्थी

एम० कुल्यान्स्की

सूचना विभाग सोवियत संघ दूतावास
नई दिल्ली

विषय सूची

प्राक्कथन

सोवियत संघ के विद्यार्थी कल के इंजीनियर, भविष्य के कृषि-वैज्ञानिक, अध्यापक और डॉक्टर, समाजवादी उद्योग के कर्णधार और प्रकृति के रूपान्तरकर्त्ता, उगती हुई पीढ़ी के पोषण का दायित्व सँभालने वाले नर-नारी, मानवता के सुख-समृद्धि के लिए जूझने वाले अथक योद्धा हैं; इसलिए यह कोई आकस्मिक नहीं कि सोवियत भूमि में उनका गहरा सम्मान किया जाता है और हर प्रकार का ध्यान रखा जाता है।

सोवियत संघ के ७६५ उच्चतर विद्यालयों में १८,६७,००० विद्यार्थी अध्ययन करते हैं, जिनमें पत्र-व्यवहार से पाठ्यक्रम पूरा करने वाले विद्यार्थियों की संख्या भी शामिल है।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की बीसवीं कांग्रेस के फैसलों के अनुसार, पाँचवीं पंचवर्षीय योजना के मुक़ाबले छठी पंचवर्षीय योजना के काल (१९५६-६०) में उच्चतर विद्यालयों से उत्तीर्ण विशेषज्ञों की संख्या में ५० फ़ीसदी और भारी उद्योग, निर्माण, यातायात और कृषि सम्बन्धी विशेषज्ञों की संख्या में लगभग १०० फ़ीसदी वृद्धि की जानी है। इस काल में कुल मिलाकर १७,००,००० नये विशेषज्ञों को प्रशिक्षित किया जायगा।

सोवियत विद्यार्थी किस प्रकार रहते, अध्ययन करते और अवकाश बिताते हैं? स्नातक बन जाने के बाद उनका भविष्य क्या होता है?

विदेशों में नौजवान इन प्रश्नों तथा जिन अन्य प्रश्नों में दिल-चस्पी रखते हैं, उनका उत्तर देने का प्रयत्न करते हुए, यदि इस पुस्तिका से इस काम का एक अंश भी पूरा हो सके, तो लेखक अपने श्रम को सफल समझेगा।

लेनिन पहाड़ी पर स्थित मास्को का लोमोनोसोव राज्य विश्वविद्यालय
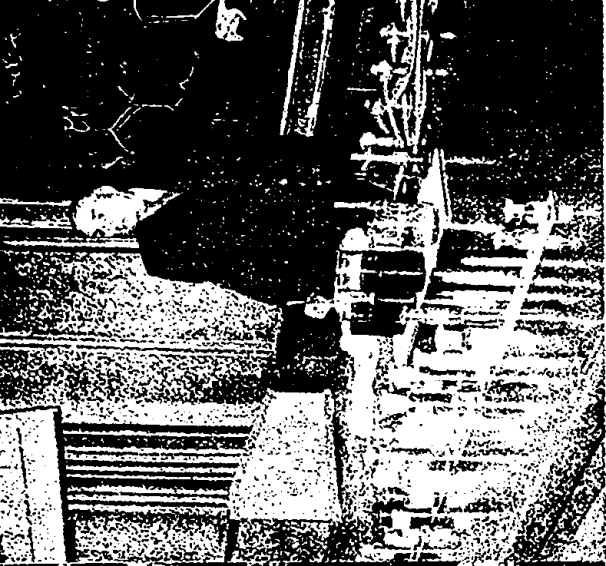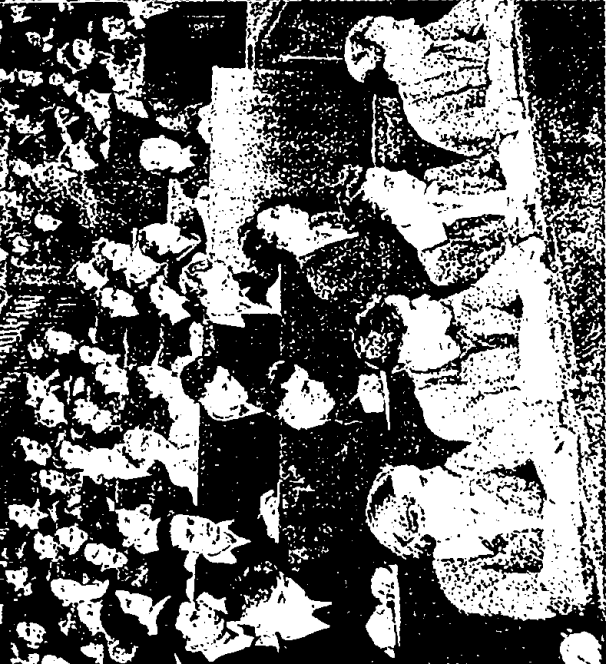
सोवियत संघ विज्ञान-अकादेमी के अध्यक्ष अकादेमीशियन अलेक्जान्देर नेस्मेयानोव मास्को विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच जैव रसायन पर एक व्याख्यान दे रहे हैं।

विद्यालय निर्धारण

वसंतागमन से परीक्षाओं का उत्तेजक काल आरम्भ हो जाता है। कुछ विद्यार्थी एक कक्षा से दूसरी कक्षा में और उच्चतर कक्षाओं में जाते हैं, तो अन्य छात्र उपाधि-ग्रहण के पवित्र दिन की प्रतीक्षा करते हैं। दस वर्ष का विद्यार्थी-जीवन पीछे छूट जाता है। बस, मैट्रिक के प्रमाण-पत्र के लिए अन्तिम परीक्षा हुई और अन्त में उपाधि-दिवस का उल्लासपूर्ण समारोह।

हर वर्ष लाखों युवक सोवियत नागरिक अपनी माध्यमिक शिक्षा सम्पूर्ण करते हैं और स्वतन्त्र जीवन में प्रवेश करते हैं। फिर उनके लिए जो मार्ग खुल जाते हैं, वे सुविस्तृत होते हैं, सम्भावनाएँ असीमित होती हैं। 'बेकारी' नाम के शब्दों से उनके देश में कोई परिचित नहीं है। हर एक को कुछ-न-कुछ काम अवश्य मिल जाता है। पाँचवीं पंचवर्षीय योजना के काल (१९५१-५५) में लगभग ३०,००,००० छात्र माध्यमिक विद्यालयों से उत्तीर्ण हुए। उनमें से कुछ लोग कारखानों और फैक्टरियों में और कुछ कृषि-क्षेत्र में काम करने गये, तो अन्य छात्रों ने उच्चतर विद्यालयों में अपनी शिक्षा जारी रखने का निश्चय किया।

जो विद्यार्थी आगे शिक्षा जारी रखने का इरादा करता है, उसके सामने वरण करने के लिए बहुसंख्यक उच्चतर विद्यालय होते हैं। सैकड़ों संस्थान उसका स्वागत करने के लिए तत्पर होते हैं और हर एक के यहाँ

अपने निकाय और विशिष्ट विषय होते हैं। वह कौनसा पेशा चुने? वह कहाँ अध्ययन करे? जब १६ या १८ वर्ष की आयु हो और सामने इतने प्रकार की तथा दिलचस्प सम्भावनाएँ हों, तो इन प्रश्नों का उत्तर खोज पाना सहज नहीं होता।

सोवियत संघ अपने उद्योग, निर्माण-कार्य, यातायात, संवाद-वहन, कृषि, शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य और राष्ट्रीय अर्थतन्त्र तथा संस्कृति के अन्य सभी क्षेत्रों के विकास के लिए सुव्यवस्थित ढंग से अपनी योजनाओं पर अमल करता रहा है। हर क्षेत्र में विशेषज्ञों की माँग रहती है, किन्तु उचित क्षेत्र चुनने के लिए विभिन्न पेशों की थोड़ी-बहुत जानकारी तो होनी ही चाहिए।

इस काम में नवयुवकों को शिक्षा-संस्थान सहायता पहुँचाते हैं, जो हर वर्ष भावी विद्यार्थियों के उपयोग के लिए बड़े-बड़े संस्करणों में विशेष संदर्भ-ग्रन्थ प्रकाशित करते हैं; उधर स्थानीय तथा केन्द्रीय समाचारपत्र विद्यालयों के नये दाखिले के बारे में विज्ञापन प्रकाशित करते हैं। इसके अतिरिक्त प्राध्यापक, इंजीनियर और विभिन्न उद्योगों तथा व्यवसायों के अन्य प्रतिनिधि, विशेष सभाओं में माध्यमिक विद्यालयों के स्नातकों के बीच भाषण करते हैं।

ये उपाय चाहे जितने प्रभावकारी हों, किन्तु उच्चतर तथा माध्यमिक विद्यालयों के बीच संस्थापित अनवरत सम्पर्क तो और भी अधिक महत्त्व-पूर्ण है। हाल में मास्को में मनाई गई एक अनूठी जयन्ती इसका उदाहरण थी: मास्को के स्कूली बच्चों के लिए संगठित किये गए प्रथम गणित-मण्डल की २०वीं वर्षगाँठ मास्को राज्य विश्वविद्यालय में मनाई गई। इस संस्था में आज ऐसे एक नहीं, अनेक मण्डल हैं जो ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में काम करते हैं। माध्यमिक विद्यालयों की उच्च कक्षाओं के हजारों विद्यार्थी उनके सदस्य हैं और उनके कामों में भाग लेते हैं। ये मण्डल उन्हें न सिर्फ उचित पेशा चुनने में मदद करते हैं, बल्कि उनमें विज्ञान के प्रति सच्ची दिलचस्पी और आसक्ति पैदा करते हैं और इस

प्रकार उनका सांस्कृतिक स्तर ऊँचा उठाते हैं।

मास्को राज्य विश्वविद्यालय हर वर्ष नगरव्यापी गणित-प्रतियोगिता का आयोजन करता है (जिसे ओलम्पियड कहा जाता है), जिसमें विभिन्न माध्यमिक और उच्चतर विद्यालयों के अनगिनत मण्डल भाग लेते हैं। इस प्रतियोगिता के पहले तैयारी का काफ़ी काम किया जाता है। आदर्श निरूपणों का एक संकलन प्रकाशित किया जाता है और गणित की अत्यन्त दिलचस्प समस्याओं पर प्रमुख वैज्ञानिक व्याख्यान देते हैं। विश्वविद्यालय के शिक्षक और विद्यार्थियों के विज्ञान-मण्डल, प्रतियोगिता में भाग लेने वालों को कई महीने पहले तैयारी करने में सहायता करते हैं। जटिलतर समस्याएँ पेश की जाती हैं और सिद्धान्त-सम्बन्धी विभिन्न प्रश्नों का विश्लेषण किया जाता है। ओलम्पियड के विजेता पुरस्कार प्राप्त करते हैं।

गणित, साहित्य, भूगोल, भौतिक विज्ञान और रसायन विज्ञान के ओलम्पियड भी लेनिनग्राद, कज़ान, कीव, तोम्स्क, पेत्रोज़ावेद्स्क और अनेक अन्य नगरों के विद्यालयों के लड़कों-लड़कियों द्वारा भी इसी भाँति आयोजित किये जाते हैं। इस प्रकार इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले युवक और युवतियाँ विज्ञान के उन क्षेत्रों के विषय में, जिनके प्रति उन्हें सबसे अधिक दिलचस्पी होती है, इतना गहन ज्ञान और गहरी सूझ-बूझ प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं, जितना कि साधारणतः उन्हें अपनी कक्षाओं में प्राप्त नहीं हो पाता। स्वाभाविक है कि स्वयं उच्चतर विद्यालयों को इसमें दिलचस्पी होती है और वे इस प्रकार की पहलक़दमी को हर प्रकार प्रोत्साहित करने का प्रयत्न करते हैं।

उदाहरणार्थ, तिबलिसी के रेलवे यातायात इंजीनियरी संस्थान का भौतिक विज्ञान विभाग उस नगर के माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के साथ वर्षों से काम कर रहा है। यह काम मुख्यतः यन्त्र विद्या, परमाणुविक भौतिक विज्ञान, ध्वनि शास्त्र, विद्युत् और प्रकाश विज्ञान के क्षेत्र में, विशेष रूप से तैयार किये गए प्रयोगशाला सम्बन्धी प्रयोगों के रूप में

किया जाता है; दिलचस्प बहसें भी होती हैं। कहना न होगा, इन अव-सरों पर उठने वाली प्राविधिक समस्याओं में छात्र सजीव दिलचस्पी लेते हैं; वे स्वयं कूट प्रश्न पेश करते हैं और अगली बैठकों में विचार करने के लिए विविध प्रसङ्ग प्रस्तावित करते हैं। विद्यालयों के साथ बेहतर सह-योग क़ायम करने की दृष्टि से संस्थान के विभिन्न निकाय माध्यमिक विद्यालयों के उन छात्रों को परामर्श और सहायता भी देते हैं, जो अपने विद्यालय के वर्कशाप में विभिन्न मॉडल और भौतिक विज्ञान में प्रयोग करने के लिए विविध यन्त्र तैयार करने का काम करते हैं।

उच्चतर और माध्यमिक विद्यालयों के बीच सम्बन्ध सुविस्तृत और बहुमुखी हैं। कुछ माध्यमिक विद्यालयों में युवक रसायनशास्त्रियों के क्लब हैं, तो अन्य में युवक भूगोलवेत्ताओं के मण्डल हैं; कुछ और विद्यालयों में भूगर्भ विज्ञान, साहित्य आदि विषयक अन्य मण्डल तथा संघ हैं। इन संगठनों के काम से यह स्पष्ट सिद्ध हो गया है कि इस काम द्वारा विद्यार्थी अपना ज्ञान-क्षेत्र व्यापक बनाते हैं और उनमें अपने ही बल पर काम करने की अमूल्य प्रवृत्ति पैदा हो जाती है। उनमें से अनेक छात्र आगे चलकर उन्हीं विषयों में संस्थानों से मैट्रिक परीक्षा पास करते हैं, जिनके लिए ठीक इन्हीं मण्डलों द्वारा वे उत्तम रीति से तैयार हो चुकते हैं।

उच्चतर विद्यालयों के विशेष विषयों के बारे में ज्ञान पैदा करने का एक और आम रूप है 'खुले दरवाजे के दिन।'

शिक्षा सत्र के दौरान में, साधारणतया छुट्टियों के दिनों में, लेनिन-ग्राद खनिज संस्थान माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए अपने दरवाजे खोल देता है। निश्चित समय पर सैकड़ों युवक-युवतियाँ सभा-भवन में जमा हो जाते हैं। संस्थान के डायरेक्टर महोदय इस पुराने विद्यालय के इतिहास का संक्षिप्त विवरण देते हैं और बताते हैं कि इसमें प्रवेश चाहने वाले विद्यार्थियों में कौनसा गुण होना चाहिए। इसके बाद विभिन्न निकायों के अध्यक्षों और प्राध्यापकों, भूगर्भवेत्ताओं और

अन्वेषकों तथा भूतत्त्ववेत्ताओं और जलतत्त्ववेत्ताओं के कामों, खानों के पेशों और महाविद्यालय के श्रेष्ठतम यन्त्रों के विषय में प्रकाश डालते हैं। इस भूमिका के बाद युवक-युवतियों को प्रयोगशालाओं तथा व्याख्यान-कक्षों का निरीक्षण करने के लिए निमन्त्रित किया जाता है। अपने दल बनाकर भवन का पर्यवेक्षण करते हुए, विद्यार्थी अपने-आपको खनिज उद्योगों के आधुनिक यन्त्रों से परिचित कराते हैं, खनिज पदार्थों के समृद्ध संकलन के संग्रहालय और खनिज प्राविधिक विद्या के इतिहास के लिए अनुष्ठित विशेष कक्षों का निरीक्षण करते हैं, आदि। यह साक्षात्कार ऐसे अनेक विद्यार्थियों के लिए निर्णयकारी सिद्ध होता है, जो यह समझ लेते हैं कि खनिज इंजीनियरी सभी पेशों से अधिक दिलचस्प और आकर्षक है।

इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों वाले सभी नगरों में प्राध्यापकों और माध्यमिक विद्यालयों के स्नातकों की बैठकें आयोजित की जाती हैं।

माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों को इस प्रकार की सहायता अनेक रूपों में दी जाती है, किन्तु परिणाम सदा एक होता है—और वह यह कि जब विद्यार्थियों के नवीन दलों के लिए उच्चतर विद्यालय अपने द्वार खोलते हैं, तो यह भरोसा किया जा सकता है कि उन्होंने संकल्प-पूर्वक अपना मार्ग चुन लिया है।

उच्चतर विद्यालयों का द्वार उन सभी के लिए खुला है जो अध्ययन करना चाहते हैं। इन संस्थाओं में ३५ वर्ष तक की आयु वाले सभी नागरिकों के लिए प्रवेश पाने का अधिकार संरक्षित है (पत्र-व्यवहार द्वारा पाठ्यक्रम और संध्या शिक्षण विद्यालयों के लिए आयु की कोई सीमा नहीं है)। सभी युवक-युवतियों को—चाहे श्वेत हों या श्याम वर्ण, चाहे रूसी हों या तु`मानी, चाहे मजदूरों या किसानों, दस्तकारों या दफ्तरों के कर्मचारियों के सपूत हों, चाहे धार्मिक हों या नास्तिक—सोवियत भूमि में किसी भी जगह उच्चतर विद्यालयों में प्रवेश पाने का समान सुअवसर प्रदान किया जाता है।

इस सम्भावना का उपयोग करने और उच्चतर विद्यालय का छात्र बनने के लिए किस बात की आवश्यकता होती है ? उत्तर है—सिर्फ ज्ञान की ! सभी उच्चतर विद्यालयों में मैट्रिक के नियमों में, एकमात्र, मगर सख्त शर्त, यही है। वर्ष-प्रति-वर्ष अधिकाधिक संख्या में युवक-युवतियाँ माध्यमिक विद्यालयों से उत्तीर्ण होकर निकल रहे हैं। समूचे सोवियत संघ में अनिवार्य माध्यमिक शिक्षा लागू हो जाने के कारण उच्चतर विद्यालयों से मैट्रिक उत्तीर्ण होने के इच्छुकों की संख्या निरन्तर बढ़ती जायगी। चालू छठी पंचवर्षीय योजना के काल में माध्यमिक विद्यालयों की दसवीं कक्षा से ६३,००,००० से कम विद्यार्थी उत्तीर्ण होकर न निकलेंगे। अपने को राष्ट्रीय अर्थतन्त्र की आवश्यकताओं के अनुरूप ढालकर, दिन में लगने वाले उच्चतर विद्यालय लगभग १२,००,००० विद्यार्थियों को दाखला देंगे। इसलिए यह स्वयंसिद्ध है कि जिन्होंने उत्तम तैयारी की होगी, सिर्फ उन्हें ही प्रवेश प्राप्त होगा।

मैट्रिक के नियम सभी उच्चतर विद्यालयों में समान हैं। प्रार्थी को माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर लेना और संस्पर्धा परीक्षाओं में उत्तीर्ण होना चाहिए। माध्यमिक विद्यालयों से जो विद्यार्थी 'उत्तम अध्ययन और अनुकरणीय आचरण के लिए' स्वर्ण-पदक प्राप्त कर उत्तीर्ण होते हैं, वे प्रवेश-परीक्षा से मुक्त कर दिये जाते हैं। रजत-पदक प्राप्त करने वाले छात्र और विशिष्ट विषय पढ़ाने वाले, माध्यमिक विद्यालयों से श्रेष्ठतम अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण होने वाले कुछ छात्र भी, प्रवेश-परीक्षा में बैठे बिना भी मैट्रिक कर सकते हैं—इसके अपवाद कुछ दर्जन अत्यन्त लोकप्रिय उच्चतर विद्यालय हैं, जिनमें ऐसे छात्रों को भी किसी एक विषय में प्रवेश-परीक्षा देने के लिए बाध्य होना पड़ता है।

शेष सभी प्रार्थियों को, उच्चतर विद्यालयों द्वारा समान रूप से निश्चित अनेक विषयों में प्रवेश-परीक्षा पास करनी पड़ती है, अर्थात् रूसी भाषा और साहित्य तथा एक विदेशी भाषा—अंग्रेज़ी, जर्मन, फ्रैंच या स्पेनिश। इसके अतिरिक्त, प्रार्थी को कई और परीक्षाएँ पास करनी

पड़ती हैं, जिनके विषय वांछित विद्यालय के विशिष्ट विषय के अनुसार निर्धारित होते हैं। उदाहरणार्थ, भावी इंजीनियरों को गणित, भौतिक विज्ञान और रसायन विज्ञान की परीक्षाएँ तथा चिकित्सा के अध्ययन की तैयारी करने वाले युवक-युवतियों को भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान आदि की परीक्षाएँ पास करनी पड़ती हैं।

प्रत्येक विषय में उनके परीक्षा-फल का मूल्यांकन 'श्रेष्ठतम', 'उत्तम', 'सन्तोषजनक' और 'असन्तोषजनक' की श्रेणियों में किया जाता है। जो लोग सभी विषयों में पास होते हैं, अर्थात् जिन्हें 'सन्तोषजनक' से कम श्रेणी नहीं प्राप्त होती, उनमें से जिन्हें उच्चतर मूल्यांकन प्राप्त होता है, उन्हें ही प्रवेश का अधिकार पहले दिया जाता है।

१६५६ में मैट्रिक के नियमों में ऐसे लोगों के लिए कुछ असामान्य अधिकार दिये गए जो स्कूली शिक्षा के बाद अपने पेशे में अमली प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं।

अधिकाधिक मजदूर माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त कर रहे हैं—टर्नर, फिटर, धातु उद्योग के कारीगर, निर्माण-कार्य के कारीगर, रसायनविद् और बुनकर। विभिन्न कामों में उन्होंने जो अनुभव प्राप्त किया है, उससे उन्हें जीवन का बेहतर ज्ञान हुआ है, पता लग गया है कि कौनसा विषय उन्हें सर्वाधिक प्रिय है, उनकी क्षमता की परीक्षा हो गई है और परिपक्व रीति से भविष्य के पेशे को चुनने तथा अध्ययन जारी रखने के लिए उचित विद्यालय चुनने के योग्य बन गए हैं।

उच्चतर विद्यालयों की प्रवेश-परीक्षाएँ साधारणतया जुलाई और अगस्त में होती हैं और २५ अगस्त तक दाखले पूरे हो जाते हैं।

संक्षेप में, सभी उच्चतर विद्यालयों में—वे चाहे किसी श्रेणी के विद्यालय हों—मैट्रिक शिक्षा के यही नियम हैं।

'श्रेणी' शब्द की थोड़ी व्याख्या की आवश्यकता है। सोवियत संघ में तीन प्रकार के उच्चतर विद्यालय हैं—विश्वविद्यालय, बहु-प्राविधिक

और विशिष्ट विषयक संस्थान ।

विश्वविद्यालय, विज्ञान की मुख्य शाखाओं के लिए विशेष प्रशिक्षित करते हैं—भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित, यन्त्र-विद्या, प्राणी विज्ञान, भूगर्भशास्त्र, भूगोल, दर्शनशास्त्र, भाषा विज्ञान, न्याय, अर्थशास्त्र आदि ।

विश्वविद्यालय के सबसे होनहार स्नातकों को वैज्ञानिक शोधकार्य और उच्चतर विद्यालयों में प्रशिक्षण का कार्य दिया जाता है और शेष स्नातक साधारण विद्यालयों और विशिष्ट विषय पढ़ाने वाले माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापक हो जाते हैं ।

बहु-प्राविधिक संस्थान अनेक भिन्न क्षेत्रों के इंजीनियर प्रशिक्षित करते हैं—धातु विद्या, यन्त्र-निर्माण, सूक्ष्मता नियामक यन्त्र-विद्या, ताप-शक्ति विज्ञान, विद्युत् शक्ति विज्ञान, विद्युत् यन्त्र निर्माण, भूगर्भशास्त्र और खनिज अन्वेषण क्रिया, अयस्क खनिज, रसायन प्राविधिक विज्ञान, निर्माण, जल-यातायात, जल-शक्ति विज्ञान, जल-संग्रह विधि, आदि क्षेत्रों के लिए ।

विशिष्ट विषयक संस्थान राष्ट्रीय अर्थतन्त्र, विज्ञान और संस्कृति की विशेष शाखाओं के लिए युवक-युवतियों को प्रशिक्षित करते हैं । इस श्रेणी में धातु-विज्ञान, खनिज, यन्त्र-निर्माण, शक्ति इंजीनियरी और लकड़ी की इंजीनियरी के अलावा अध्यापक प्रशिक्षण विद्यालय, चिकित्सा विद्यालय, कृषि, कला, न्याय, वाणिज्य, अर्थशास्त्र, रेलवे-यातायात, जल-यातायात और अन्य विषयों के संस्थान आते हैं ।

कुछ उच्चतर विद्यालय अकादमी कहलाते हैं । मास्को के के० ए० तिमिरियाजेव कृषि अकादमी, लेनिनग्राद के एस० एम० किरोव लकड़ी इंजीनियरी अकादमी तथा अन्य अकादमियों पर यही बात लागू होती है ।

कुछ संस्थान आज भी विद्यालय कहलाते हैं । उदाहरणार्थ, सबसे पुरानों में से एक है मास्को का बॉमन उच्चतर प्राविधिक विद्यालय ।

नाम-भेद होने का अर्थ यह नहीं कि प्रशिक्षण-विधि में कोई गम्भीर अन्तर होता है।

*　　　*　　　*

इस प्रकार जो विद्यार्थी उच्चतर विद्यालय से मैट्रिक पास करने जाते हैं, उन्हें पहले वह पेशा चुनना पड़ता है जिसमें अपना जीवन अर्पित करने का उनका इरादा होता है और वह विद्यालय चुनना होता है जिसकी उन्हें आवश्यकता होती है।

यह ठीक है कि केवल यही काफ़ी नहीं होता। अभी भी एक और प्रश्न, जो आसान नहीं होता, हल करना पड़ता है—कौनसा उच्चतर विद्यालय वह चुने ? यह भी पाठ्यक्रम की दृष्टि से उतना नहीं, जितना स्थान की दृष्टि से।

सोवियत संघ में उच्चतर विद्यालयों के स्थानों की स्थिति पूर्णतया परिवर्तित हो गई है। क्रान्ति के पहले उच्चतर विद्यालय १६ नगरों में, मुख्यतः केन्द्रीय रूस में केन्द्रित थे। आज सोवियत संघ के २२५ नगरों में उच्चतर विद्यालय हैं। प्रत्येक संघीय जनतन्त्र में उसका अपना विश्वविद्यालय तथा प्राविधिक, कृषि, चिकित्सा, अध्यापक प्रशिक्षण और अन्य प्रकार के उच्चतर विद्यालय हैं, जिनमें शिक्षा स्थानीय मूल आबादी की भाषा में दी जाती है। यह बताना काफी होगा कि अकेले यूक्रेनियन सोवियत समाजवादी जनतन्त्र में १३३ उच्चतर विद्यालय हैं, जिनमें ३,२५,००० विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं।

अन्य जनतन्त्रों में भी कोई कम उच्चतर विद्यालय नहीं हैं—बायलोरूस में २३, ज्यार्जिया में १६, आर्मीनिया में १२, अज़रबैजान में १४, उज़बेकिस्तान में ३४, कज़ाकस्तान में ३५, आदि।

सोवियत बाल्टिक जनतन्त्रों में भी महत्त्वपूर्ण प्रगति हुई है। युद्ध के बाद से लिथुआनिया में उच्चतर विद्यालयों से १८,००० विशेषज्ञ दीक्षित हुए हैं। लिथुआनियाई सोवियत समाजवादी जनतन्त्र के संस्थानों में अब २३,००० विद्यार्थी, अर्थात् सोवियत संघ में इस प्रजातन्त्र के

शामिल होने के पहले की अपेक्षा लगभग छः गुने अधिक विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते हैं।

हर जनतन्त्र के अब अपने बुद्धिजीवी हैं। अनेक जातियों में क्रान्ति के पहले जिनकी अपनी लिखित भाषा भी न थी, अब अपने इंजीनियर, कृषि-विशेषज्ञ, अध्यापक, डॉक्टर, वैज्ञानिक और लेखक हैं।

सुदूरतम क्षेत्रों में भी उच्चतर शिक्षा के विद्यालय स्थापित हैं।

क्रान्ति के पहले सारे यूराल, साइबेरिया और केन्द्रीय एशियाई प्रजातन्त्रों के प्रदेशों में केवल चार ऐसे संस्थान थे, किन्तु अब वहाँ २०० उच्चतर विद्यालय हैं जिनमें ४,००,००० विद्यार्थी अध्ययन करते हैं। अकेली पाँचवीं पंचवर्षीय योजना में पूर्वीय क्षेत्रों के अन्दर पच्चीस नये उच्चतर विद्यालय स्थापित किये गए।

कज़ाक सोवियत समाजवादी जनतन्त्र में न सिर्फ राजधानी अलमा-अता में उच्चतर विद्यालय हैं, बल्कि कई अन्य नगरों में भी हैं—अक्त्यूबिन्स्क, कुस्तानाई, चिमकेन्त, क्ज़िल-ओर्दा, सेमीपालतिन्स्क, यूराल्स्क, कारगंडा, गुरयेव, उस्त-कामेनोगोरस्क और पेत्रोपावलोवस्क में। अन्य प्रजातन्त्रों में भी यही स्थिति है।

इसके कारण सोवियत संघ के सुदूरतम क्षेत्रों में भी उच्चतर विद्यालयों तक युवक-युवतियों की पहुँच है।

पिछले शरद में ताजिक विश्वविद्यालय में वक्ष घाटी, गोर्नो-बदख्शाँ क्षेत्र और गार्म के अनेक विद्यार्थियों ने प्रवेश किया। किरगीज़ राज्य विश्वविद्यालय में फ्रुंज़ क्षेत्र के आइवनोवका ज़िले के सन्ताश ग्राम के सात विद्यार्थी हैं। कुल मिलाकर इस गाँव के ३० युवक-युवतियाँ इस जनतन्त्र की राजधानी फ्रुंज़ के विभिन्न उच्चतर विद्यालयों में शिक्षा पाते हैं।

सोवियत सुदूर-पूर्व में बसने वाली अनेक जातियों के नौजवान खबारोवस्क, व्लाडीवास्टिक, याकुत्स्क, कोम्सोमोल्सक-ऑन-आमूर, वोरोशिलोव तथा अन्य नगरों में उच्चतर शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। इस

क्षेत्र में सबसे नया विद्यालय युज़नो-सखलिन्स्क अध्यापक प्रशिक्षण विद्यालय है, जिसकी नींव १९५५ में पड़ी थी। इसके प्रारम्भिक विद्यार्थियों में माध्यमिक विद्यालय के स्नातक ही नहीं, ऐसे नर-नारी भी थे, जो औद्योगिक संस्थानों में व्यावहारिक अनुभव प्राप्त कर चुके थे। उदाहरणार्थ गणित विभाग का नव-स्नातक म्याचिन हाल तक कोर्साकोव बन्दरगाह में मज़दूर था; विद्यार्थी ली सुन मुन पहले एक कारखाने में फिटर था और छात्र बाबुरिन फौज़ से विद्यालय में आया था।

विभिन्न पेशों में व्यावहारिक अनुभव प्राप्त कर विद्यालयों में प्रवेश करने वाले युवक-युवतियों की संख्या काफ़ी बढ़ गई है। १९५५ में उच्चतर विद्यालयों द्वारा स्वीकार किये गए २,५७,००० छात्रों (जिनमें पत्र-व्यवहार से शिक्षा प्राप्त करने वाले या सान्ध्य विद्यालयों के छात्रों की संख्या शामिल नहीं है) में से हजारों छात्र फैक्टरियों और कारखानों, सामूहिक खेतों और फौज से आये थे।

उच्चतर शिक्षा के आकांक्षी नौजवानों की वार्षिक बाढ़ मास्को की शिक्षा-संस्थाओं में विशेष रूप से जबर्दस्त रही है। देश के विभिन्न भागों से विविध पेशों और जीवन के सभी क्षेत्रों से युवक-युवतियाँ राजधानी में आये हैं, जिनमें सोवियत संघ में वास करने वाली अगणित जातियों और जनताओं के सपूत हैं। यद्यपि राजधानी के उच्चतर विद्यालय को किसी भी प्रकार का विशेष संरक्षण प्राप्त नहीं है और उनमें मैट्रिक के नियम भी अन्य विद्यालयों से किसी भी प्रकार भिन्न नहीं हैं, फिर भी मास्को के शिक्षा-संस्थानों में अध्ययन करने की महत्त्वाकांक्षा समझ में आती है। ऐतिहासिक कारणों से, सबसे पुराने और सबसे बड़े शिक्षा-संस्थान मास्को में केन्द्रित हैं और उनमें सर्वोत्तम शिक्षक और प्राध्यापक हैं।

राजधानी का सबसे बड़ा उच्चतर विद्यालय मास्को राज्य विश्वविद्यालय है, जिसका नामकरण महान् रूसी वैज्ञानिक एम० वी० लोमोनोसोव के नाम पर किया गया है। विश्वविद्यालय के नव-निर्मित भाग

के विषय में काफ़ी लिखा गया है जो 'विज्ञान महल' के नाम से उचित ही विख्यात है। हजारों विदेशी, जो सोवियत संघ में विभिन्न प्रतिनिधि-मण्डलों के सदस्य या यात्री के रूप में आते हैं, हर वर्ष इस विद्यालय को देखते हैं। अकेले १६५५ में अनेक देशों के ७०० से अधिक प्रतिनिधि-मण्डल इस संस्था को देखने के लिए आये।

मास्को विश्वविद्यालय विशाल स्थापत्य के ४० भवनों का समूह है, जिसका कुल घनफल २६,००,००० घन मीटर, अर्थात् चार मंजिल वाले १८५ विद्यालयों के बराबर है। अगर इन इमारतों को दो पाँतों में खड़ा किया जाय तो उनके बीच में ४.५ किलोमीटर लम्बी सड़क बन जायगी।

विश्वविद्यालय के ढाँचे के कुल घनफल का आधा भाग सबसे ऊँची मुख्य इमारत घेरती है, जिसके केन्द्रीय विभाग में ३२ मंजिलें हैं और दोनों ओर १८ और ६ मंजिलें हैं। सारी इमारत में घूमने पर १४५ किलोमीटर चलना होगा।

विश्वविद्यालय की इमारतें फूलों की क्यारियों और सज्जापूर्ण गुल्मों से पूर्ण नये उद्यान, एक वनस्पति उद्यान और जलाशयों से घिरी हुई हैं। मुख्य इमारत तक के मार्ग के दोनों ओर हरियाली और मर्मस्पर्शी मूर्तियों की पाँत है। उद्यान और वनस्पति उद्यान समेत विश्वविद्यालय लगभग २०० हेक्टर भूमि पर फैला हुआ है, यानी एक छोटे नगर के बराबर क्षेत्र है। यहाँ कोई ६,००० विद्यार्थियों और स्नातकों के अपने कमरे हैं। विद्यार्थी ८ वर्ग मीटर के कमरों और स्नातक १२ वर्ग मीटर के कमरों में रहते हैं जो साधारण और सुविधाजनक रूप से सुसज्जित हैं।

मुख्य इमारत में एक विद्यार्थी क्लब है, जिसमें ८०० विद्यार्थियों के बैठने योग्य सभा भवन, एक तैरने योग्य जलाशय, जिसमें दर्शकों के लिए स्टैंड बने हुए हैं, और विशेष प्रकार के खेलों के लिए छोटी-छोटी व्यायामशालाएँ तथा शारीरिक व्यायाम के लिए अन्य स्थान हैं।

१६,००० छात्रों में (जिनमें पत्र-व्यवहार से शिक्षा प्राप्त करने वालों

की संख्या शामिल नहीं है) ५६ जातियों के युवक-युवतियाँ शामिल हैं, जो सोवियत संघ के सभी भागों से आये हैं और उनमें अनेक बाहरी देशों के विद्यार्थी भी हैं। उनमें मजदूरों और सामूहिक खेतिहरों, इंजीनियरों और अध्यापकों, डॉक्टरों और कृषि-विशेषज्ञों के पुत्र-पुत्रियाँ हैं; वे जीवन के सभी क्षेत्रों से आये नौजवान हैं।

प्रशिक्षण की पद्धतियाँ

सभी उच्चतर विद्यालय १ सितम्बर से अपना सत्र प्रारम्भ करते हैं।

इस दिन की गम्भीरता वे लोग आसानी से समझ सकते हैं, जिन्होंने विद्यार्थी की हैसियत से पहली बार किसी कालेज में प्रवेश किया होगा और वह उत्तेजना अनुभव की होगी जो व्याख्यान-कक्ष में प्रवेश करने और पहले ही व्याख्यान की टिप्पणियाँ लिखने के लिए अपनी कापियाँ खोलने के समय पैदा होती है।

नये विद्यार्थी को हमेशा नई प्रशिक्षण-पद्धति के विषय में कौतूहल होता है जो माध्यमिक विद्यालय की पद्धति से बिलकुल भिन्न होती है। यहाँ कोई सबक नहीं पढ़ाया जाता; किसी को ब्लैक बोर्ड के पास नहीं बुलाया जाता; घर के लिए कोई काम नहीं दिया जाता; हर चीज़ भिन्न होती है।

सोवियत उच्चतर विद्यालयों में प्रशिक्षण की पद्धतियाँ क्या हैं ?

प्रशिक्षण-व्यवस्था निश्चित करने वाला मूल प्रपत्र, प्रत्येक विशिष्ट विषय के लिए निर्धारित, पाठ्य-सूची है। पाठ्य-सूची के अध्ययन की अवधि भिन्न-भिन्न होती है। उदाहरणार्थ, विश्वविद्यालयों में पाँच वर्ष का पाठ्यक्रम होता है, जबकि बहु-प्राविधिक और विशिष्ट विषयक शिक्षा-संस्थानों में चार-पाँच और कुछ विषयों में छः वर्ष तक का पाठ्यक्रम होता है। (यह विशिष्ट विषय की जटिलता पर निर्भर करता है।)
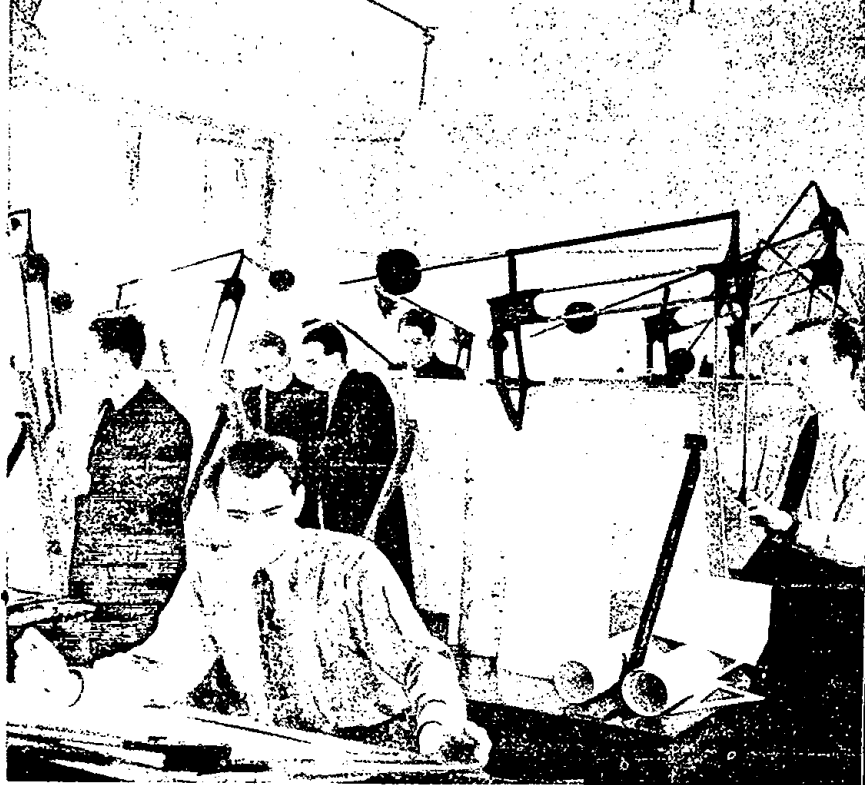
मास्को शक्ति-संस्थान में उपाधि-योजना तैयार करने का कार्य करने का एक कमरा। चित्र में सामने स्नातक होने की तैयारी कर रहे ईंधन-शक्ति-विभाग के एक छात्र अनातोली सेर्गेयेव बैठे हुए हैं।

बर्नाल कृषि-मशीन-निर्माण-संस्थान की छात्रा रोज़ा तुसुशबायेवा धातु-कटाई के एक पाठ के समय। शिक्षक हैं अलेस्केई लास्किन, संस्थान के यन्त्र-खाते के शिक्षक शेरमैन।

अध्यापक-प्रशिक्षण और पुस्तकालयाध्यक्ष संस्थानों का पूरा पाठ्यक्रम चार वर्ष का होता है, जबकि खनिज, यन्त्र-निर्माण, शक्ति इंजीनियरी और अन्य शिक्षा-संस्थानों में पाठ्यक्रम पाँच वर्ष का होता है। चिकित्सा और शिल्प-कला संस्थानों में छः वर्ष का पाठ्यक्रम होता है।

सोवियत संघ के उच्चतर विद्यालयों में प्रशिक्षण-व्यवस्था कई वर्षों तक अध्ययन के अनुक्रम पर आधारित है। व्याख्यानों में उपस्थिति अनिवार्य है। इस प्रकार के अनिवार्य व्याख्यानों की संख्या (जिसमें प्रयोगशाला का कार्य, विचार-विमर्श गोष्ठियाँ, आदि शामिल हैं) निम्न-लिखित निश्चित की गई है : प्रारम्भिक वर्षों में ३६ घण्टे से अधिक नहीं और अन्तिम वर्षों में ३० घण्टे से अधिक नहीं।

शिक्षा-वर्ष के दो सत्र होते हैं : शरद् सत्र, १ सितम्बर से २३ जन-वरी तक और वसन्त सत्र, ७ फरवरी से ३० जून तक। वर्ष में दो बार विद्यार्थियों को छुट्टियाँ मिलती हैं : २४ जनवरी से ६ फरवरी तक शीत-काल में और १ जुलाई से ३१ अगस्त तक ग्रीष्म-काल में।

अध्ययन का अनुक्रम, उसकी अविच्छिन्नता और विभिन्न विषयों की पारस्परिक निर्भरता, पाठ्य-सूची में बताये गए शिक्षा-चक्र से निश्चित होती है : सामान्य वैज्ञानिक चक्र, विशिष्ट-विषयक चक्र और सामाजिक आर्थिक चक्र। कुछ उच्चतर प्राविधिक विद्यालयों में अतिरिक्त सामान्य इंजीनयिरी चक्र भी होता है, जिसका इंजीनियरों के प्रशिक्षण में महत्त्व-पूर्ण स्थान है।

उच्चतर विद्यालयों में विभिन्न चक्रों के लिए व्याख्यान के घण्टों का अनुपात निम्नलिखित निश्चित किया गया है : सामान्य विज्ञान के लिए ३२ फ़ी सदी तक, सामान्य इंजीनियरी के लिए ३५ फ़ीसदी तक, विशिष्ट-विषयक चक्र के लिए २५ फ़ीसदी तक और सामाजिक-आर्थिक चक्र के लिए ८ फ़ीसदी तक।

विश्वविद्यालयों में प्रयोगशील विज्ञान के निकायों में अनुपात भिन्न हैं : सामान्य विज्ञान के लिए २७ फ़ीसदी, सामाजिक-आर्थिक चक्र के

लिए १२ फ़ीसदी और विशिष्ट-विषयक चक्र के लिए ६१ फ़ीसदी ।

अन्त में उल्लिखित चक्र के लिए 'विशिष्ट-विषयक चक्र' का शब्द स्वेच्छाचारी है, क्योंकि ये विषय मूलतः सामान्य सैद्धान्तिक या सामान्य वैज्ञानिक प्रकृति के होते हैं ।

प्रशिक्षण की पद्धतियाँ क्या हैं ? वे अनेक हैं, किन्तु उनका मुख्य उद्देश्य होता है विद्यार्थी की रचनात्मक शक्ति और आत्म-निर्भरता का पूर्णतम विकास करना ।

अध्ययन के मूल रूप ये हैं : व्याख्यान, व्यावहारिक अध्ययन और विचार-गोष्ठियाँ, सत्रीय परियोजना, सत्रीय निबन्ध, प्रयोगशाला अध्ययन, अभ्यास और उत्पादन प्रशिक्षण, परामर्श, स्वतन्त्र कार्य, उपाधि परि-योजना, और राजकीय परीक्षाएँ ।

अध्ययन-क्रम में व्याख्यान मुख्य कड़ी होते हैं । सामान्यतः विद्यार्थियों के समय का ५० फ़ीसदी इसी के लिए निश्चित होता है । व्याख्यानों में प्रस्तुत विषय के मूल तत्त्वों को स्पष्ट किया जाता है और उनका अध्ययन बढ़ाने के लिए दिशा निर्देशित कर दी जाती है । अनेक व्याख्यानों के साथ-साथ प्रयोग-माला, प्रत्यक्ष निरूपण कार्य, फ़िल्म-प्रदर्शन भी किये जाते हैं ।

व्याख्यानों के बाद, एक नियम की भाँति, अमली काम (अभ्यास), विचार-विमर्श गोष्ठी और प्रयोगशाला सम्बन्धी कार्य किया जाता है । भौतिक विज्ञान, गणित, यन्त्र सिद्धान्त, यांत्रिक प्रक्रिया सिद्धान्त, मशीनों और पदार्थ-शक्ति के सिद्धान्त के विषय में अमली काम (अभ्यास) किया जाता है । इसमें एक निर्देशक के निरीक्षण में हर विद्यार्थी कोई-न-कोई प्रयोग करता है, जिसका उद्देश्य होता है कि विद्यार्थी ने व्याख्यान के ज़रिए जो बात सीखी है उसे विकसित और समृद्ध किया जाय, वह अपने निष्कर्ष स्वयं निकाल सके, और अपना हिसाब-किताब स्वयं कर सके । इस प्रकार के अभ्यास-कार्य के बाद, विद्यार्थी पाठ्य-पुस्तकों के सहारे अपना अध्ययन जारी रखने में और सुदृढ़तर आधार पर उसको

लागू करने में समर्थ हो जाता है। विचार-विमर्श गोष्ठियाँ मुख्यतः साहित्य-कला प्रकृति और सैद्धान्तिक विषयों पर आयोजित की जाती हैं।

प्रयोगशाला में अध्ययन, चिकित्सालय में कार्य आदि की तरफ विशेष ध्यान दिया जाता है। इस तरह के काम से सिद्धान्त-मूलक पाठ्य-क्रम की अधिक सर्वांगीण समझ पैदा होती है, विद्यार्थी को अपनी प्रयोग-शील प्रवृत्ति बनाने में सहायता मिलती है और जिस साज़-सामान का आगे चलकर उन्हें उपयोग करना पड़ेगा, उससे वे साक्षात् रूप से अपने को परिचित करा लेते हैं। प्रयोगशाला में हर विद्यार्थी को उसका अपना स्थान दिया जाता है और किसी निर्देशक के निरीक्षण और पथ-प्रदर्शन में अपने प्रयोगशाला विषयक कार्य को वह पूरा करता है।

प्रमुख प्रयोगशालाओं में विद्यार्थी को न सिर्फ पाठ्य-सूची के अनु-सार काम करने का अवसर मिलता है, बल्कि अपने-आप प्रयोग करने के लिए आवश्यक साज-सामान स्वयं तैयार करने, अपने निष्कर्षों का विश्लेषण करने और उनका साधारणीकरण करने का भी अवसर प्राप्त होता है। रासायनिक पदार्थ तथा अन्य सामग्री मुफ्त मिलती है। जब उसका प्रयोगशाला-सम्बन्धी अध्ययन समाप्त हो जाता है तो विद्यार्थी अपने काम के विषय में विशेष उप-परीक्षा विवरण तैयार करता है।

उच्चतर प्राविधिक विद्यालयों में, अनेक पाठ्य-क्रमों में बिन्दुरेखा-मूलक गणना-पत्र या सत्रीय परियोजना पूरी करना आवश्यक होता है। साहित्य-कला प्रभृति विषयों में सत्रीय निबन्ध तैयार करने पड़ते हैं। कोई विषय पूरा पढ़ लेने पर और निर्धारित बिन्दुरेखा-मूलक गणना-पत्र तैयार कर लेने पर, विद्यार्थी अपनी सत्रीय परियोजना सम्पन्न करने में जुटता है। सत्रीय परियोजना की परिमिति, स्वरूप और प्रसङ्ग, विषय से निर्धा-रित होता है। प्रत्येक सत्रीय परियोजना को विद्यार्थी स्वतन्त्रतापूर्वक पूरा करता है। निर्देशक की भूमिका सलाह-मशविरा देने और सम्पन्न कार्य की देख-रेख करने तक ही सीमित रहती है। अध्यापक को विद्यार्थी के स्वतन्त्र कार्य में बाधा न डालनी चाहिए, न कोई तैयारशुदा हल बताना

चाहिए और न किसी पूर्व-सम्पन्न परियोजना के अन्धानुकरण की अनुमति देनी चाहिए; बल्कि हर प्रकार उसकी पहल को प्रोत्साहन देना चाहिए।

सत्रीय परियोजना, सम्बन्धित विभाग के सामने, उस निर्देशक की उपस्थिति में पेश की जाती है, जिसने काम की देख-रेख की हो। विद्यार्थी अपने काम के विषय में संक्षिप्त विवरण देता है, और जिस पद्धति पर अमल किया है उसका, अपनी गणना का और प्राप्त निष्कर्षों का औचित्य सिद्ध करता है।

साहित्य, कला आदि विषयक उच्चतर विद्यालयों में विद्यार्थी, विभागीय अध्यक्ष द्वारा पूरे एक या दो सत्र के लिए प्रस्तावित निबन्धों में से एक से अधिक निबन्धों पर न काम करके, प्रमुख विषयों पर सत्रीय निबन्ध तैयार करता है। सत्रीय परियोजना की भाँति सत्रीय निबन्ध का उद्देश्य भी यही होता है कि स्वतंत्र कार्य की प्रवृत्ति पैदा हो, और विद्यार्थी साहित्य तथा मूल स्रोतों का व्यापक रूप से उपयोग करना सीख जाय—प्रसंगवश, संस्था के पुस्तकालय और अध्यापक के परामर्श से इस कार्य में सुविधा प्राप्त होती है।

प्रत्येक सत्र के अन्त में सिद्धान्तमूलक अध्ययन समाप्त होने के बाद कई परीक्षाएँ होती हैं, जिनमें पाठ्यक्रम के चार या पाँच विषयों से अधिक नहीं लिये जाते।

विद्यार्थी की प्रगति का कोई समसामयिक मूल्यांकन नहीं किया जाता, सिर्फ़ उसका काम पूरा होने और उसके पेश किये जाने के तथ्य का विवरण ले लिया जाता है। उसकी प्रगति की एकमात्र कसौटी परीक्षाएँ और उपपरीक्षा विवरण होते हैं। परीक्षा के लिए तीन या चार सप्ताह दिये जाते हैं। परीक्षा-क्रम इस प्रकार निश्चित किया जाता है कि विद्यार्थी को हर प्रस्तुत विषय पर अपनी याददाश्त फिर ताजी करने के लिए कम-से-कम तीन दिन मिल जायँ। कुछ विषयों में परीक्षा से पहले अमली अध्ययन से सम्बन्धित उपपरीक्षा विवरण ले लिये जाते हैं। हर विषय में कोई प्रधान प्राध्यापक या अध्यापक, जो सत्र-भर व्याख्यान देता है,

परीक्षा लेता है, और उपपरीक्षा विवरणों की जाँच सहकारी और निर्देशक करते हैं। मूल्यांकन चार अंकों के आधार पर किया जाता है : 'श्रेष्ठतम', 'उत्तम', 'संतोषजनक' और 'असंतोषजनक'। उपपरीक्षा विवरणों में सिर्फ़ 'पास' लिखा जाता है।

एक या दो विषयों में जिस विद्यार्थी को असंतोषजनक अंक प्राप्त होते हैं, वह अगले सत्र में प्रारम्भिक दो सप्ताहों के अन्दर दुबारा परीक्षा में बैठ सकता है। अगर उसे दो से अधिक विषयों में असंतोषजनक अंक प्राप्त होते हैं तो उसे शिक्षा-संस्थान से अलग किया जा सकता है। अगर वह अपनी असफलता का वाजिब कारण पेश कर सकता है तो संस्थान का बोर्ड उसके लिए उसी पाठ्यक्रम में एक और वर्ष स्वीकार कर लेता है।

पाठ्य-सूची में अमली प्रशिक्षण का महत्त्वपूर्ण स्थान है और यह प्रशिक्षण अमली अभ्यासों और विभिन्न कार्यों में उत्पादन प्रशिक्षण द्वारा किया जाता है।

अध्ययन के प्रारम्भिक वर्षों में अमली प्रशिक्षण प्रयोगशालाओं, अध्ययन-कक्षों, अभ्यास के वर्कशापों, मनोनीत स्थलों और संस्थान के अन्य सहायक विभागों में आयोजित किया जाता है। अमली प्रशिक्षण का उद्देश्य यह होता है कि विद्यार्थी सारे साज़-सामान और उसके उपयोग के मूल सिद्धान्तों से परिचित हो जाय; इससे अधिक सर्वांगीण सैद्धान्तिक ज्ञान पैदा होता है और उस उत्पादन-प्रशिक्षण के लिए विद्यार्थी तैयार हो जाता है, जिसका प्रबन्ध प्रमुख फैक्टरियों और कारखानों तथा राष्ट्रीय अर्थतन्त्र, संस्कृति, सार्वजनिक स्वास्थ्य, शिक्षा और राजकीय प्रशासन के क्षेत्रों में किया जाता है।

विशेष योग्यता के विषय के अनुसार पाठ्यक्रम में उत्पादन-प्रशिक्षण के लिए समय निर्धारित किया जाता है। इंजीनियरी, निर्माण, यातायात, अर्थतन्त्र, कृषि, वन-विकास, जीव-विज्ञान, भूगर्भ-विज्ञान और भूगोल तथा कलाओं के लिए बीस से तीस सप्ताह तक उत्पादन-प्रशिक्षण के लिए रखे जाते हैं। जो विद्यार्थी ऐतिहासिक भाषा-विज्ञान सम्बन्धी विषयों,

भौतिक विज्ञान और गणित, न्याय, चिकित्सा, पशु-चिकित्सा, शिक्षा-शास्त्र तथा व्यायाम और खेल-कूद का अध्ययन करते हैं, वे इस काम में छः से बीस सप्ताह तक लगाते हैं।

उत्पादन-अभ्यास से हमारा अर्थ पेशों से सम्बन्धित अभ्यास से होता है। उदाहरणार्थ, प्राविधिक संस्थानों के विद्यार्थी फैक्टरियों और कारखानों तथा निर्माण-स्थलों में अमली प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं; कृषि के छात्र सामूहिक खेतों, मशीन-ट्रैक्टर-केन्द्रों तथा राजकीय फार्मों में काम करते हैं; शिक्षा-शास्त्र के संस्थानों के विद्यार्थी स्कूलों में और चिकित्सा-विज्ञान के विद्यार्थी अस्पतालों और रोगीगृहों में काम करते हैं, आदि।

उत्पादन-प्रशिक्षण से विद्यार्थियों में सैद्धान्तिक ज्ञान को विशेष अमली हालतों पर लागू करने की क्षमता पैदा हो जाती है और वे अपने विशिष्ट विषय से सम्बन्धित काम के बारे में व्यावहारिक ज्ञान और काम करने की सूझ-बूझ हासिल कर लेते हैं।

उत्पादन प्रशिक्षण निम्नलिखित रूपरेखा के अनुसार होता है। हर संस्थान किसी प्राविधिक रूप से विकसित औद्योगिक संस्थाओं से, कम-से-कम पाँच वर्ष तक के लिए, सम्बन्धित रहता है। इन उद्योगों में, किसी कुशल विशेषज्ञ को विद्यार्थियों के प्रशिक्षण की आम देख-रेख करने और व्यक्तिगत जिम्मेदारी लेने का भार सौंप दिया जाता है (वह फैक्टरी या कारखाने का मुख्य इंजीनियर या मशीन-ट्रैक्टर-केन्द्र, राजकीय फार्म आदि का संचालक हो सकता है)। वर्कशापों और फैक्टरी विभागों में शिक्षार्थी की देख-रेख सम्बन्धित विभाग का प्रधान करता है। विद्यार्थियों को मशीन के उपकरणों, मशीनों और अन्य विभागों से सम्बधित अपने-अपने काम की कुशलता सिखाने की ज़िम्मेदारी सर्वोत्तम फोरमैनों, ब्रिगेडों के नेताओं और कार्य-संचालकों को सौंपी जाती है। जिन निर्देशकों और कारीगरों को यह काम सौंपा जाता है उन्हें अतिरिक्त वेतन दिया जाता है। जो संस्थान अपने विद्यार्थियों को अमली प्रशिक्षण के लिए भेजता है, वह उनकी चिन्ता करना नहीं छोड़ता। विभाग द्वारा शास्त्रीय निर्देशन के

अतिरिक्त, हर संस्थान शिक्षार्थियों के प्रत्येक दल के साथ किसी ऐसे शिक्षक को नियुक्त करता है जिसे स्वयं उत्पादन का प्रत्यक्ष ज्ञान हो।

अमली प्रशिक्षण से प्रत्येक विद्यार्थी को अध्ययन-काल में सम्पूर्ण उत्पादन-क्रम समझ लेने का अवसर मिलता है। साथ ही, विद्यार्थी को डिजाइन बनाने, योजना बनाने, संगठन करने और उत्पादन में किफ़ायतशारी करने में, अमली प्रशिक्षण दिया जाता है; वह उद्योग के सर्वांग उत्पादन का अध्ययन करता है और साथ ही साज़-सामान के प्राविधिक सुधार और उसके संचालन की उन्नत पद्धतियाँ भी सीखता है। विद्यार्थी के ज्ञान का क्षेत्र विस्तृत करने के लिए, पड़ोस के उद्योग-धन्धे, शोध-संस्थान, आदि, देखने का प्रबन्ध किया जाता है।

उत्पादन का अभ्यास किस प्रकार कराया जाता है?

औद्योगिक संस्था से लौटने के बाद विद्यार्थी अपने कार्यक्रम के पूर्ण करने के विषय में एक विवरण पेश करते हैं और उन्हें एक उपपरीक्षा पास करनी पड़ती है। अध्ययन-काल के अंतिम वर्षों में ये विवरण विभाग द्वारा नियुक्त दो या तीन की कमेटी के सामने पेश किये जाते हैं, जिसका अध्यक्ष सम्बन्धित विषय का व्याख्याता-प्राध्यापक होता है। विवरण पेश करने का काम सार्वजनिक रूप से होता है।

विश्वविद्यालयों के कई निकायों में, जिनमें मुख्यतः स्कूली अध्यापकों के प्रशिक्षण का कार्य होता है, अध्यापक-प्रशिक्षण के कार्य की कुछ अपनी ही विशेषताएँ होती हैं। भावी अध्यापक 'अप्रत्यक्ष अभ्यास' के काल में अपने विशिष्ट विषय में ८० पाठों और अन्य विषयों में तीन या चार पाठों में उपस्थित होते हैं। पद्धति-विशेषज्ञ के निर्देशन में वे उन विषयों में से किन्हीं एक या दो पाठों का विश्लेषण करते हैं, जिनमें वे उपस्थित रहे थे। परीक्षण रूप में, हर विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के छः पाठ स्वतन्त्रतापूर्वक पढ़ाता है। इसके अतिरिक्त विद्यार्थी विद्यालय के शिक्षात्मक और सामाजिक कार्यों, पर्यटन-व्यवस्था, आदि में भाग लेते हैं। इस सबसे उन्हें भविष्य में स्वतन्त्र कार्य करने का ठोस अनुभव प्राप्त होता है।

विद्यार्थी औद्योगिक प्रतिष्ठानों, सामूहिक खेतों, मशीन-ट्रैक्टर-केन्द्रों, राजकीय फार्मों में निष्क्रिय दर्शक की भाँति नहीं, स्थानीय कर्मचारियों के सक्रिय सहायकों के रूप में आते हैं।

१९५५ में, लतावियन कृषि अकादमी के भूमि-पर्यवेक्षण और जल-संग्रह विभाग के विद्यार्थियों ने अपने जनतन्त्र के सामूहिक खेतों में अमली प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्राध्यापक पी० के० कोनरद और डोसेण्ट के० ई० केलनिन्श के निर्देशन में—दोनों ही प्रमुख विशेषज्ञ हैं—उन्होंने खेती की भूमि की गणना की और ६०,००० हेक्टर से अधिक क्षेत्र में बारी-बारी से फ़सलें उगाने की व्यवस्था जारी कराई। जल-संग्रह के विद्यार्थियों ने छः सामूहिक खेतों के १,३०० हेक्टर क्षेत्र में सुधार-शोध का काम किया। उन्होंने नदी की दशा और सिंचाई के जलाशयों की व्यवस्था देखी और ४४ किलोमीटर से अधिक दूरी तक उन दोनों का जल पहुँचाने की परियोजना तैयार की। उनके द्वारा किये गए कार्य का मूल्य २,५०,००० रूबल आँका गया है।

इस प्रकार विद्यार्थियों और अमली कार्य-क्षेत्र के सम्बन्ध लगातार घनिष्ठ बनाये जाते हैं और उनके सिद्धान्तपरक ज्ञान की परीक्षा होती है, जिससे कुशल विशेषज्ञों का प्रशिक्षण सहज बनता है।

* * *

अध्ययन के विभिन्न स्वरूपों में उपाधि-परियोजनाओं के कार्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसका उद्देश्य होता है विद्यार्थियों के ज्ञान को व्यवस्थित, सुदृढ़ और व्यापक बनाना, और उनमें इंजीनियरी की समस्याओं को स्वतन्त्रतापूर्वक हल करने की सूझ-बूझ पैदा करना। उपाधि के लिए नया समनुविधान, स्नातकीय परियोजना, तैयार करने के आधार पर ही इंजीनियर की पदवी प्रदान की जाती है।

यह काम कैसे किया जाता है?

उपाधि परियोजना की रूपरेखा तभी सीधे-सीधे शुरू की जाती है जब विद्यार्थी अपने अन्तिम पाठ्यक्रम अर्थात् उपाधि-पूर्व के अमली प्रशिक्षण

के लिए जाते हैं। इससे उनका शास्त्रीय अध्ययन और अमली प्रशिक्षण सँवर जाता है और यह इस क्षेत्र में उनके स्थायी काम के पहले कदम का काम देता है। जब कभी सम्भव होता है, तो उपाधि-पूर्व के अमली प्रशिक्षण का प्रबन्ध ऐसे प्रतिष्ठानों में किया जाता है, जिनमें उपाधि प्राप्त करने के बाद विद्यार्थी काम पाने की आशा करते हैं।

अपनी विशिष्ट शाखा में काम करते और अस्थायी रूप से सुनिश्चित प्राविधिक कार्य करते हुए, विद्यार्थी अपनी उपाधि-परियोजना के लिए सामग्री जमा करते हैं, जिसका विषय पहले निश्चित कर दिया जाता है। वे टिप्पणियाँ तैयार करते हैं, रेखाचित्र बनाते हैं और ऐसी सामग्री चुनते हैं जो प्राविधिक चित्रों, मानचित्रों, हिसाब-किताब, तालिकाओं, प्रामाणिक सामग्री, आदि के रूप में उदाहरणस्वरूप उपयोग में आ सकती हो।

यह काम समाप्त कर, विद्यार्थी अपनी उपाधि-परियोजना पर काम करने बैठ जाते हैं। यह काम चार से छः महीने के अन्दर पूरा हो जाना चाहिए। उच्चतर प्राविधिक विद्यालयों में उपाधि-परियोजना के लिए विषय काफी विस्तृत और विविध होते हैं। नियम रूप में, विद्यार्थी को, किसी औद्योगिक प्रतिष्ठान की, किसी स्वतन्त्र इकाई या मशीन की, किसी औज़ार या अन्य किसी सामग्री की, रूपरेखा तैयार करने को दी जाती है, जिसका निर्धारण उसके काम की शाखा के अनुसार होता है। विद्यार्थी से किसी नये और उन्नत प्राविधिक हल और उत्पादन के अभिनवीकरण या सुधार के लिए किन्हीं सुझावों की आशा की जाती है।

उदाहरणार्थ १९५६ में वोरोनेज़ नागरिक इंजीनियरी संस्थान के स्नातकों ने, अपने उपाधि-निबन्ध पेश करते हुए, निर्माण-कार्य के लिए बड़े-बड़े-पूर्व-निर्मित अंश और खण्ड बनाने, पूर्व-निर्मित नींवें तैयार करने, गर्डर के बिना पहले से ढली हुई छतें बनाने और अन्य उन्नत निर्माण के विषय में औद्योगिक और नागरिक इंजीनियरिंग के विषय में दिलचस्प लेख प्रस्तुत किये। मास्को के उच्चतर प्राविधिक विद्यालयों के छात्र

वी० शेकोव और ए० स्टैपेनोव ने नवीनतम प्राविधिक सफलताओं को साधारणीकृत करते हुए अपने उपाधि-निबन्ध तैयार किये और सफलता-पूर्वक उन्हें प्रमाणित किया। उनकी योजना में रेलवे-यातायात में अणु-शक्ति का उपयोग करने की सम्भावनाओं का मूल्यांकन करने का सुगम्भीर प्रयत्न किया गया था। उन्होंने ५,५०० हार्सपावर के भारवाहक आणुविक इंजन का डिज़ाइन तैयार किया था। राजकीय परीक्षा बोर्ड ने देखा कि उनका परियोजना-कार्य इस समस्या के सर्वांग-ज्ञान के आधार पर किया गया था और उसके रचनाकारों ने अपने अनुविधान के लिए ऐसा योगदान किया था जो नया और अमूल्य था।

स्नातक अक्सर कुशलता-सम्बन्धी अपने सुझाव पेश करते हैं, जो उत्पादन के लिए अक्सर बहुमूल्य सिद्ध हुए हैं।

उपाधि-कार्य साधारणतया शिक्षा-संस्थान के अन्दर ऐसे अध्ययन-कक्षों में किया जाता है जो इसी कार्य के लिए निश्चित होते हैं। हर विद्यार्थी को काम के लिए अपना स्थान दिया जाता है और आवश्यक संदर्भ-ग्रन्थ, वैज्ञानिक साहित्य, अनुविधान (डिज़ाइन) सम्बन्धी प्रामाणिक आँकड़े और खाके बनाने का साज-सामान दिया जाता है। बैठकों में स्नातकों के साथ व्यवस्थित रूप से विचार-विमर्श करके, उपाधि-कार्य के लिए जिम्मेदार निर्देशक वार्ताएँ आयोजित करते हैं, सलाह देते हैं और उनकी प्रगति की जाँच करते रहते हैं। आवश्यकता होती है तो औद्योगिक प्रतिष्ठानों और शोध-संस्थानों के प्रमुख विशेषज्ञों को सलाह-मशविरे के लिए निमन्त्रित किया जाता है।

जब काम पूरा हो जाता है तो विद्यार्थी उसे अपने निर्देशक के सामने पेश करता है, जो उस विद्यार्थी द्वारा प्रदर्शित पहलक़दमी, उसके स्वतन्त्र कार्य की क्षमता और सोवियत तथा विदेशी साहित्य के उपयोग की सीमा के विषय में एक लिखित विवरण तैयार करता है और फिर उस उपाधि-परियोजना को विभागीय अध्यक्ष के सामने पेश करता है जो यह तय करते हैं कि स्नातक को अपनी स्थापना की प्रतिरक्षा करने का अवसर

दिया जाय या नहीं।

राजकीय परीक्षा बोर्ड के सामने, जिसे हर वर्ष मन्त्रालय नियुक्त करते हैं, उपाधि-निबन्धों की प्रतिरक्षा सार्वजनिक रूप से की जाती है। यह बोर्ड अपनी ओर से एक समीक्षक नियुक्त करता है जो हर परियोजना की जाँच करता है और उसके पेश करने के समय अपनी राय प्रकट करता है। यह बोर्ड प्राध्यापकों और शिक्षकों, वैज्ञानिकों और इंजीनियरों, औद्योगिक विशेषज्ञों और विद्यार्थियों को अपनी बैठक में उपस्थित होने के लिए निमन्त्रित करता है। निबन्ध पेश हो जाने के बाद बोर्ड की गुप्त बैठक होती है, जिसमें विभिन्न विशेषज्ञों की रायों पर उचित विचार-विमर्श किया जाता है। निष्कर्षों पर विचार होता है और बहुमत से उपाधि-परियोजना के मूल्यांकन अंक निश्चित किये जाते हैं।

साहित्य-कला प्रभृति सम्बन्धी उच्चतर विद्यालयों में और विश्वविद्यालयों में विद्यार्थी अपनी थीसिसें (निबन्ध) पेश करते हैं और राजकीय परीक्षाओं में भाग लेते हैं। जिस विद्यार्थी को राजकीय परीक्षा में कम-से-कम ७५ फ़ीसदी विषयों में 'श्रेष्ठतम' अंक प्राप्त होते हैं, और शेष में जिसे 'उत्तम' अंक प्राप्त होते हैं, तथा जो 'श्रेष्ठतम' श्रेणी में अपनी थीसिस पेश करता है, उसे सम्मानसहित उपाधि प्राप्त होती है। इससे उसे काम का स्थान चुनने के लिए कुछ विशेष सुविधाएँ प्राप्त होती हैं और स्नातकोत्तर अध्ययन जारी रखने के विशेषाधिकार प्राप्त होते हैं।

उपाधि-थीसिस और निबन्ध पेश करने तथा राजकीय परीक्षाओं की वर्तमान व्यवस्था से विद्यार्थी के ज्ञान की सर्वांग परीक्षा की गारण्टी हो जाती है।

* * *

विद्यालयों के विभिन्न विभागों द्वारा संगठित अनेक स्वेच्छित विज्ञान-मण्डल और समितियाँ, ऐसे विद्यार्थियों की, जो सुदृढ़ वैज्ञानिक प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहते हैं, अमूल्य सेवा कर रही हैं। ऐसे संगठन विद्यार्थियों का व्यापक रूप से ˙स्कार करते हैं और उन्हें स्वतन्त्र वैज्ञानिक शोध के

मार्ग पर आरूढ़ करते हैं ।

विज्ञान-मण्डलों और समितियों का पथ-निर्देशन प्राध्यापक और शिक्षक करते हैं जो विभिन्न उपायों से विद्यार्थियों को वैज्ञानिक कार्य की ओर आकर्षित करते हैं। प्रारम्भिक मंज़िलों में विद्यार्थी तैयारी का काम करते हैं, प्रयोगशालाओं में सहकारी की हैसियत से काम करते हैं और अपने निर्देशक द्वारा निश्चित अमली काम को पूरा करते हैं। बाद में वे स्वदेशी और विदेशी सूत्रों के आधार पर निबन्ध और भाष्य लिखते हैं, औद्योगिक प्रतिष्ठानों की सहायता के लिए विभाग द्वारा आयोजित वास्तविक शोध-कार्य में भाग लेते हैं, प्रयोग की पद्धति पर अधिकार प्राप्त करते हैं और अन्ततः, यथा-शक्ति अपना स्वतन्त्र शोध-कार्य करते हैं। अक्सर होता यह है कि गम्भीर वैज्ञानिक और व्यावहारिक निष्कर्ष ऐसे युवक-युवतियाँ स्थापित करते हैं जो अभी विद्यार्थी ही होते हैं।

उदाहरणार्थ, येरेवन विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक, भौतिक विज्ञान और गणित विभाग के एक छात्र, ए० अवेतिस्यन के कार्य से स्तम्भित रह गए, जिसने पहली बार फलन सिद्धान्त के विषय में गणित के प्रसिद्ध प्रमेयों में से एक का साधारणीकरण किया। यह युवक अच्छे-खासे वैज्ञानिक मूल्य के निष्कर्षों पर पहुँचा।

१९५५ के ग्रीष्मकाल में, कज़ान विश्वविद्यालय के छात्रों के एक दल ने बोलियों के शोध के लिए वैज्ञानिक अनुसन्धान-पर्यटन किया। तातारिया के अलावा विद्यार्थियों ने उल्यानोवस्क क्षेत्र के जिलों, उदमुर्त और बशकीर स्वायत्त समाजवादी सोवियत जनतन्त्र की यात्रा की। इस दल ने स्थानीय बोलियों के विषय में बहुमूल्य सामग्री एकत्र की, जिसको विज्ञान अकादमी के तत्त्वावधान में संकलित सोवियत संघ के भाषावार भूगोल के मानचित्र में शामिल किया जायगा।

रूसी उच्चतर विद्यालयों में वैज्ञानिक कार्य के लिए छात्रों को भरती करने के काम की पुरानी परम्परा है। सुदूर १९०९ में ही, प्रसिद्ध वैज्ञानिक निकोलाई ईगोरोविच ज़ुकोवस्की ने मास्को उच्चतर प्राविधिक

विद्यालय में विद्यार्थियों का विज्ञान-मण्डल संगठित किया था। रूस में यह अपने प्रकार का पहला संगठन था। उसके किसी समय के सदस्यों में, आधुनिक विख्यात अकादमीशियन, ए० एन० तुपोलेव और बी० एन० यूरियेव, विज्ञान और इंजीनियरिंग के सम्मानित श्रमिक वी० पी० वेत्चिन्किन, आदि हैं। एन० वाई० जुकोवस्की के चरण-चिह्नों पर चलकर आज प्रमुख वैज्ञानिक विद्यार्थियों के प्रशिक्षण में जुटे रहते हैं। १९४३ में सभी विज्ञान-मण्डल, विद्यार्थियों के एक वैज्ञानिक-प्राविधिक संघ से सम्बद्ध कर दिये गए, जिसका एन० वाई० जुकोवस्की के नाम पर नामकरण किया गया।

विज्ञान-मण्डलों में या व्यक्तिगत रूप से वैज्ञानिक अनुसन्धान कार्य में रत विद्यार्थियों को एकताबद्ध करने वाली इस प्रकार की विज्ञान-समितियाँ सोवियत संघ के अनेक उच्चतर विद्यालयों में स्थापित की गई हैं। विद्यार्थियों की विज्ञान-समितियाँ शिक्षा-संस्थानों के विद्यार्थी सम्मेलन में भाग लेती हैं, सर्वोत्तम वैज्ञानिक निबन्धों की प्रतियोगिताएँ संगठित करती हैं, औद्योगिक प्रतिष्ठानों और शोध-संस्थानों का पर्यवेक्षण संगठित करती हैं, व्याख्यान कराती हैं, रिपोर्टें, फिल्म-प्रदर्शन, प्रमुख वैज्ञानिकों और उत्पादन के नवान्वेषकों की सभाएँ आयोजित करती हैं, आदि। उनका प्रबन्ध एक कौंसिल करती है जो साधारण सभा में चुनी जाती है।

शिक्षा-संस्थानों में सम्मेलनों और प्रतियोगिताओं के आयोजन के अलावा, बड़े नगरों में विद्यार्थियों के सर्वोत्तम निबन्ध चुनने के लिए खुली प्रतियोगिताएँ होती हैं, जिनमें उच्चतर शिक्षा मन्त्रालय की ओर से प्रमाण-पत्र और नकद पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं।

वैज्ञानिकों द्वारा सम्मत विद्यार्थी-निबन्धों को एक विशेष संग्रह में प्रकाशित किया जाता है। ऐसे प्रकाशनों की संख्या हर वर्ष बढ़ती जा रही है। पहले इनका प्रकाशन मुख्यतः मास्को और लेनिनग्राद के शिक्षा-संस्थानों द्वारा होता था, अब उनका प्रकाशन अन्य नगरों से भी होता है।

१९५६-५७ के शिक्षा-वर्ष के आरम्भ से, हर वर्ष सर्वोत्तम वैज्ञा-

निक निबन्ध के लिए अखिल संघीय प्रतियोगिता भी हुआ करेगी। उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों को प्रोत्साहन देने के लिए, निर्णायकों द्वारा स्वीकृत सर्वोत्तम वैज्ञानिक निबन्धों पर उच्चतर शिक्षा मन्त्रालय द्वारा ५० पदक पुरस्कार में देने की व्यवस्था की गई है।

* * *

हाल के वर्षों में पत्र-व्यवहार और सांध्य पाठ्यक्रम भी विशेषज्ञ तैयार करने का व्यापक माध्यम हो गया है।

सोवियत संघ में मानसिक और शारीरिक कार्य के बीच का मूल-भेद समाप्त करने का काम तेजी से हो रहा है। माध्यमिक विद्यालयों के स्नातक अधिकाधिक संख्या में उद्योग-धन्धों और कृषि के क्षेत्र में काम करने जा रहे हैं। ये कार्यकर्ता जब भौतिक उत्पादन के क्षेत्र में पहुँच जाते हैं, तो वे उत्पादन-स्तर और श्रमिक की कार्य-कुशलता के विकास में वृद्धि कर देते हैं। उत्पादन-कार्य में संलग्न रहने के साथ ही वे अपनी शिक्षा को परिष्कृत करने की कोशिश करते हैं। ज्ञान की इस पिपासा को शान्त करने के लिए उच्चतर विद्यालय वर्ष-प्रति-वर्ष सांध्य-शिक्षण और पत्र-व्यवहार-शिक्षण का जाल फैलाते जा रहे हैं। अकेले पाँचवीं पंच-वर्षीय योजना-काल (१९५१-५५) में लगभग १०० पत्र-व्यवहार और सांध्य-शिक्षण-संस्थान खोले गए। उसी काल में, काम के साथ अध्ययन जारी रखने वाले लोगों की संख्या ४,२७,००० से बढ़कर ७,१८,००० हो गई। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की बीसवीं कांग्रेस के प्रस्ताव में पत्र-व्यवहार और सांध्य-शिक्षण का जाल और अधिक विस्तृत करने की व्यवस्था रखी गई है, ताकि उत्पादन के अमली पक्ष से पूरी तरह परिचित विशेषज्ञों के प्रशिक्षण का काम सहज हो। आशा की जाती है कि १९६० तक पत्र-व्यवहार और सांध्य-शिक्षण-संस्थाओं में नाम लिखाने वाले विद्यार्थियों की संख्या १०,००,००० तक हो जायगी।

पत्र-व्यवहार और सांध्य-शिक्षण कैसे संगठित किया जाता है?

अधिकांश उच्चतर विद्यालयों में पत्र-व्यवहार और सांध्य-प्रशिक्षण

विभाग स्थापित किये गए हैं। साथ ही, स्वतन्त्र रूप से पत्र-व्यवहार शिक्षण और सांध्य विद्यालय भी कायम हैं।

इस प्रकार का एक सबसे बड़ा प्रतिष्ठान अखिल संघीय पत्र-व्यवहार प्राविधिक संस्थान है, जिसमें नौ विभाग हैं और वह ५७ शाखाओं में इञ्जीनियरों का प्रशिक्षण करता है; उसके पत्र-व्यवहार शिक्षार्थियों की संख्या २०,००० तक पहुँच गई है। अध्ययन के बेहतर संगठन की दृष्टि से इस संस्थान ने सोवियत संघ के २८ नगरों में अपनी शाखाएँ और परामर्श-कार्यालय खोल रखे हैं। मसलन, केन्द्रीय एशिया के विद्यार्थी उससे ताशकन्द, चिरचिक और अलमा-अता में सम्पर्क कायम कर सकते हैं; साइबेरिया के विद्यार्थियों को क्रास्नोयार्स्क और नोवोसिबिर्स्क कार्यालयों से शामिल किया जा सकता है। यूराल्स में वोल्गा-स्थित कई नगरों, डोनबा क्षेत्र में और सुदूर उत्तर तक में वोरकुता, नोरिल्स्क और मागदन में इस संस्थान का प्रतिनिधित्व हैं।

अनेक उच्चतर विद्यालयों में भी पत्र-व्यवहार विभाग हैं, जो अपना काम छोड़े बग़ैर अध्ययन करने वाले विशेषज्ञों के प्रशिक्षण के प्रमुख केन्द्र माने जा सकते हैं। उदाहरणार्थ, मास्को विश्वविद्यालय के पत्र-व्यवहार विभाग से ४,००० से अधिक विद्यार्थी सम्बन्धित हैं।

विशिष्ट विषय के अनुसार, पत्र-व्यवहार के पाठ्यक्रम का काल भी भिन्न-भिन्न होता है—मगर सामान्य पाठ्यक्रमों से उसका काल निश्चय ही एक साल अधिक होता है। प्रत्येक पत्र-व्यवहार विद्यार्थी को संस्थान से सम्पूर्ण पाठ्यक्रम की अध्ययन-अनुक्रमणिका प्राप्त हो जाती है। इस अनुक्रमणिका में प्रत्येक पाठ्यक्रम के विषयों की व्याख्या, उनका अध्ययन-क्रम, किसी एक विषय में आयोजित परीक्षाओं की संख्या, परीक्षाओं के लिए अवधि, और उपपरीक्षा विवरणों तथा व्यावहारिक और प्रयोगशाला सम्बन्धी अध्ययन के लिए निश्चित किये गए घण्टों की संख्या का विवरण दिया होता है।

पत्र-व्यवहारक विद्यार्थी नियमित रूप से डाक द्वारा पद्धति-निरूपण,

सन्दर्भों, पाठ्य-पुस्तकों के विषय में हिदायतें और अन्य प्रकार की सहायता प्राप्त करते हैं।

'प्रयोगशाला-कार्य और परीक्षा-काल' में पत्र-व्यवहारक विद्यार्थी प्रयोगशाला-कार्य, व्याख्यान, सिंहावलोकन, तथा परामर्श के लिए, और उपपरीक्षाओं तथा परीक्षाओं के लिए शिक्षा-संस्थान में या उसके किसी विभाग में बुलाये जाते हैं।

जो लोग पाठ्यक्रम पूरा कर लेते हैं, राजकीय परीक्षा पास कर लेते हैं या उपाधि-निबन्ध पेश करते हैं, उन्हें उपाधि-पत्र प्राप्त होता है जिससे उन्हें वही अधिकार प्राप्त होते हैं जो नियमित रूप से उपाधि प्राप्त करने वालों को होते हैं।

पत्र-व्यवहारक विद्यार्थी अनेक विशेष सुविधाएँ प्राप्त करते हैं। उन्हें प्रतिवर्ष काम से ३० दिन की अतिरिक्त छुट्टी (तनखा समेत) पाने का हक़ होता है ताकि वे परीक्षा में बैठ सकें, अपने उपपरीक्षा-विवरण तैयार कर सकें, प्रयोगशाला सम्बन्धी अध्ययन चला सकें, आदि। काम के स्थान में उन्हें रात-पाली न करने की छूट दी जाती है, उत्पादन का अध्ययन करने के लिए हर प्रकार का अवसर सुलभ किया जाता है और उनके विशिष्ट विषय से सम्बन्धित काम पर उनका तबादला कर दिया जाता है। उनको उपाधि-परियोजना की तैयारी करने और पेश करने के लिए चार महीने की छुट्टी दी जाती है। इस काल में उन्हें राज्य से वजीफ़ा मिलता है और शहर से बाहर रहने वाले छात्रों को विद्यार्थियों के होस्टलों में रहने की जगह दी जाती है।

* * *

हम उच्चतर विद्यालयों के शिक्षा-संगठन, विद्यार्थियों के वैज्ञानिक शोध-कार्य, और पत्र-व्यवहार तथा सांध्य-शिक्षण द्वारा उच्चतर शिक्षा का वर्णन कर चुके हैं। अन्त में, हम शिक्षकों के विषय में कुछ शब्द कहना चाहते हैं। १,००,००० से अधिक प्राध्यापक, सहकारी प्राध्यापक, और शिक्षक सोवियत संघ के उच्चतर विद्यालयों में नौजवान विशेषज्ञों

के प्रशिक्षण-कार्य में लगे हुए हैं। सुविख्यात वैज्ञानिक इस काम को सम्मानप्रद और श्रेयस्कर समझते हैं। सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष नेस्मेयानोव मास्को विश्वविद्यालय के रसायन विभाग में व्याख्यान देते हैं। अकादमीशियन ओपेरिन प्राणिशास्त्र विभाग में और विज्ञान अकादमी के सदस्य वेक्सलर भौतिक विज्ञान विभाग में व्याख्यान देते हैं।

सोवियत संघ की चिकित्सा-विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष अकादमीशियन बाकुलेव मास्को चिकित्सा-संस्थान में, सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी के आचार्य महामन्त्री अकादमीशियन तोपचियेव मास्को तैल संस्थान में, अकादमीशियन फॉक लेनिनग्राद विश्वविद्यालय में, अकादमीशियन कपित्सा मास्को के भौतिक विज्ञान तथा प्राविधिक संस्थान में, अकादमीशियन अबुज़ोव कज़ान विश्वविद्यालय में, अकादमीशियन अर्तोबोलेवस्की मास्को उड्डयन संस्थान में, आदि, व्याख्यान देते हैं।

अधिकांश प्राध्यापक और शिक्षक शोध-कार्य समेत शिक्षण और नौजवान स्नातकों के प्रशिक्षण-कार्य का संयोग स्थापित करते हैं। स्नातकोत्तर अध्ययन का काल तीन वर्ष से अधिक नहीं होता, जिसमें इन अधि-स्नातकों को विज्ञानाचार्य (मास्टर आफ़ साइंस) की परीक्षा पास करना होता है, अपना अध्यापन-कार्य और वैज्ञानिक कार्य पूरा करना होता है और विज्ञानाचार्य की वैज्ञानिक उपाधि के लिए थीसिस तैयार करना और सार्वजनिक रूप से पेश करना होता है। स्नातकोत्तर विद्यार्थी को राज्य से ७०० से लेकर ८०० रूबल तक की छात्र-वृत्ति (वजीफ़ा) प्राप्त होता है। इसके अलावा, हर एक को वैज्ञानिक साहित्य के खर्चे के लिए एक अतिरिक्त निधि प्राप्त होती है और उसे छात्र-वृत्ति के साथ दो महीने की छुट्टी पाने तथा स्नातकोत्तर अध्ययन समाप्त करने के बाद एक महीने की छुट्टी पाने का अधिकार होता है।

विद्यार्थियों के रहन-सहन का स्तर

सोवियत संघ में उच्चतर विद्यालयों में प्रवेश करने के लिए नौजवानों को हर प्रकार का अवसर दिया जाता है; किसी प्रवेश-शुल्क की आवश्यकता नहीं होती; प्रवेश-परीक्षा मुफ्त होती है; नगर से बाहर के विद्यार्थियों को परीक्षा की तैयारी करने और उसमें शामिल होने की सुविधा देने के लिए छात्रावासों में रहने की जगह दी जाती है।

हमारे विदेशी मेहमानों ने अक्सर पूछा है—नौजवान श्रमिक या दफ़्तर का कर्मचारी कैसे मैट्रिक पास कर सकता है ? क्या इस परीक्षा के लिए दस से पन्द्रह दिन की आवश्यकता नहीं होती ? बात सही है। मगर ऐसे मामलों में, जिन प्रतिष्ठानों में शिक्षार्थी नौकर होते हैं, वे उन्हें परीक्षा-काल में यात्रा और प्रवास के लिए विशेष छुट्टी देने की व्यवस्था करते हैं।

मैट्रिक पास करने के बाद विद्यार्थी को राज्य से सहायता पाने का अधिकार होता है।

सोवियत संघ में ८० प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों को मिलने वाली छात्र-वृत्ति के विषय में कुछ शब्द कह दूं। राज्य द्वारा छात्र-वृत्ति स्वीकार किये जाने में, विद्यार्थी की प्रगति और आर्थिक स्थिति का भी उचित ध्यान रखा जाता है। शिक्षा-संस्थान के संचालक सामाजिक संगठनों की मध्यस्थता से छात्र-वृत्तियाँ स्वीकार करते हैं—प्राथमिकता उन्हें दी जाती है जो परीक्षाओं में उत्तम और श्रेष्ठतम अंक प्राप्त करते हैं, और कुछ

व्यक्तिगत मामलों में संतोषजनक अंक प्राप्त करने वालों को भी दी जाती है।

छात्र-वृत्ति की निधि सभी विद्यार्थियों के लिए समान नहीं होती; यह विद्यार्थी के अध्ययन-वर्ष, विशिष्ट विषय और प्रगति पर निर्भर करती है, अर्थात् एक सत्र से दूसरे सत्र में विद्यार्थी की प्रगति के अनुपात से छात्र-वृत्ति भी बढ़ती है। धातु-विज्ञान, रसायन-विज्ञान और खनिज-विज्ञान के विद्यार्थियों को अधिक छात्र-वृत्ति प्राप्त होती है। जो विद्यार्थी सभी विषयों में श्रेष्ठतम श्रेणी प्राप्त करते हैं, उनकी छात्र-वृत्ति २५ प्रतिशत बढ़ा भी दी जाती है।

अपनी प्रगति श्रेष्ठतम सिद्ध करने वाले विद्यार्थियों को सरकार द्वारा स्थापित विशेष छात्र-वृत्तियाँ प्राप्त होती हैं। इनमें से ५,००० छात्र-वृत्तियों का नामकरण, पुश्किन, लर्मोन्तोव, गोर्की जैसे विख्यात लेखकों या न्यूटन, तिमिर्याजेव, जुकोवस्की आदि अन्य प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के नाम पर किया गया है। इस तरह की छात्र-वृत्तियाँ ७८० रूबल प्रतिमास तक होती हैं।

सोवियत विद्यार्थी के बजट का अनुमान निम्नलिखित उदाहरण से प्राप्त किया जा सकता है। हम बहु-प्राविधिक संस्थान के एक ऐसे विद्यार्थी पर विचार करें, जिसे श्रेष्ठतम श्रेणी से कम दरजा हासिल हुआ है, जिसे २५ प्रतिशत अतिरिक्त नहीं प्राप्त होता और जिसे विशिष्ट विषय के लिए स्वीकृत अतिरिक्त निधि भी नहीं प्राप्त होती; संक्षेप में, वह हजारों-लाखों विद्यार्थियों की तरह औसत विद्यार्थी है। प्रथम वर्ष में उसे २९० रूबल प्रतिमास प्राप्त होगा; दूसरे वर्ष में उसे ३२० रूबल, तीसरे और चौथे वर्ष में ३५५ रूबल और पाँचवें वर्ष में ३९५ रूबल मिलेंगे। फिर उसकी छुट्टियों में, जो ढाई महीने की होती हैं, छात्र-वृत्ति मिलना बन्द न होगा।

शहर से बाहर के विद्यार्थियों के रहने के लिए, अधिकांश उच्चतर विद्यालयों में उनके अपने छात्रावास हैं, और साथ ही, मास्को, लेनिनग्राद स्वेर्दलोवस्क, तिब्लिसी आदि जैसे बड़े नगरों में विद्यार्थियों के लिए विशेष निवास-भवन बनाये गए हैं, जिनमें अध्ययन, आराम और मनो-

विनोद के लिए सभी आवश्यक साज-सामान है।

इस तरह का ही एक छात्र-केन्द्र मास्को में स्त्रोमिन्का नामक स्थल पर है। सुसज्जित कमरों के अलावा, विद्यार्थियों के निवास-क्षेत्र में क्लब, रेडियो-केन्द्र, पुस्तकालय और वाचनालय हैं। वहाँ विद्यार्थियों के लिए एक चिकित्सालय, सार्वजनिक भोजनालय, विभिन्न दूकानें, दर्जी की दूकानें, जूता और कपड़े ठीक करने की दूकानें, एक सार्वजनिक स्नानागार और एक धुलाई की दूकान हैं। प्रत्येक मकान में पढ़ने और आराम करने के कमरे हैं। खेल-कूद के मैदान पास में ही हैं।

लेस्नाया का छात्र-केन्द्र लेनिनग्राद के सबसे बड़े छात्रावासों में से एक है। लेनिनग्राद बहु-प्राविधिक संस्थान के हज़ारों विद्यार्थियों के लिए यहाँ अनेक आवास-भवन, आरामदेह निवास-स्थान प्रदान करते हैं। लगभग १,५०० युवक-युवतियाँ क्लब भवन में शाम गुजारते हैं; इसके लिए एक पूरी इमारत अलग रखी गई है। यह क्लब व्याख्यानों, संगीत-मंडलियों, सिनेमा-प्रदर्शनों, आदि का आयोजन करता है।

छात्रावासों की कौंसिलें नौजवानों के जीवन में प्रमुख भूमिका अदा करती हैं। वे ही बड़े पैमाने पर सांस्कृतिक कार्य संगठित करती हैं, कमियों को दूर कर रहन-सहन के स्तर को सुधारती हैं और हर विद्यार्थी को सुरुचि-पूर्ण और सुखद मनोरंजन प्रदान करने के लिए भरसक प्रयत्न करती हैं।

छात्रावासों की संख्या हर वर्ष बढ़ती जा रही है। पाँचवीं पंचवर्षीय योजना-काल (१९५१-५५) में, अकेले उच्चतर शिक्षा मंत्रालय के तत्त्वावधान में दर्जनों विशाल निवास-भवन बनाये गए, जिनमें ७५,००० विद्यार्थियों तक रह सकते थे (उच्चतर विद्यालयों का कुछ भाग अन्य मंत्रालयों के मातहत है; जैसे अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान, संघीय जनतंत्रों के मंत्रालयों के मातहत हैं; चिकित्सा संस्थान, सार्वजनिक स्वास्थ्य विभाग के मातहत हैं; रेलवे संस्थान, रेलवे मंत्रालय के अधीन हैं, आदि)। तोमस्क और चेल्याबिन्स्क बहु-प्राविधिक संस्थानों, लेनिनग्राद, तुर्कमान (अश्का-बाद में) और केन्द्रीय एशियाई (ताशकंद में) विश्वविद्यालयों, ज़्दानोवस्क

धातु-विज्ञान संस्थान, नोवोचेर्कस्क इञ्जीनियरी और शोधन संस्थान, बायलो रूसी कृषि अकादमी, मिन्स्क के कृषि मशीन संस्थान आदि अन्य शिक्षा-संस्थानों के छात्र नये और सुनियोजित छात्रावासों का उपयोग कर रहे हैं।

फिर भी छात्रावासों की वृद्धि, उच्चतर विद्यालयों के लिए आनेवाले विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि के साथ कदम मिलाकर चलने में असफल रही है। इसी कारण, छठी पंचवर्षीय योजना में विद्यार्थियों के लिए निवास-भवन बनाने के काम में काफ़ी वृद्धि की जानी है। वास्तव में १९५६ के प्रारम्भिक महीनों में ही विद्यार्थियों के रहने के लिए अनेक नये मकान बनकर तैयार हो चुके थे। उच्चतर शिक्षा मंत्रालय को आशा है कि चालू पंचवर्षीय योजना में ८५,००० से ९०,००० विद्यार्थियों के रहने योग्य छात्रावास बन जायँगे।

उच्चतर विद्यालय अपने कोष का अधिकतर भाग, छात्रावासों के सुप्रबन्ध के लिए रखते हैं। विद्यार्थी, अपनी ओर से, सुसज्जित कमरे के और सार्वजनिक सेवाओं के लिए १० रूबल प्रतिमास जैसी हलकी दरें और बिस्तर के लिए ५ रूबल अतिरिक्त देता है, जो कोई भी विद्यार्थी अपने साधनों में से भली भाँति दे सकता है। विद्यार्थी भोजनालय, जो सामान्यतः शिक्षा-संस्थान में, छात्रावासों में या छात्रों के निवास-केन्द्र में स्थित होते हैं, अपने ग्राहकों के सीमित साधनों को देखते हुए रिआयत बरतते हैं।

विद्यार्थियों का एक औसत भोजनालय है मास्को के विद्यार्थी निवास केन्द्र संख्या १ में (९, द्वितीय दोन्स्की प्रायेज्द, मास्को), जिसमें मास्को के तीन बड़े संस्थानों, खनिज विज्ञान संस्थान, लौहेतर धातु विज्ञान संस्थान और इस्पात संस्थान के विद्यार्थी रहते हैं।

यह भोजनालय, जहाँ ५०० विद्यार्थियों के बैठने की जगह है, सुबह ७ बजे से रात को ११ बजे तक खुला रहता है। भोजन के लिए, पहली और दूसरी परोस और अन्त में फलाहार के लिए, यहाँ विविध सामग्री

होती है और अपनी हैसियत के अनुकूल कीमत पर, विद्यार्थी यहाँ तीनों वक्त का भोजन प्राप्त कर सकता है।

अपने विद्यार्थी ग्राहकों की सुविधा के लिए, प्रबन्धक दस, बीस या तीस दिन के लिए भोजन-टिकट दे देते हैं। अनेक नौजवान अपना हिसाब-किताब रखने के आदी नहीं होते और ऐसे कार्डों के कारण वे अन्य वस्तुओं पर अपनी हैसियत से अधिक खर्च कर देने और संकट में फँस जाने से बच जाते हैं।

विद्यार्थियों के भोजनालयों की ओर न सिर्फ शिक्षा-संस्थाओं का प्रशासन ध्यान देता है, बल्कि ट्रेड यूनियनें और अन्य सामाजिक संगठन भी ध्यान रखते हैं।

सोवियत संघ में कोई शिक्षण-शुल्क नहीं लिया जाता और न प्रयोगशालाओं, पुस्तकालयों, रसायनों, परीक्षाओं आदि के लिए शुल्क माँगा जाता है।

अगर उत्पादन-प्रशिक्षण के लिए विद्यार्थी को किसी दूसरे शहर या जिले में भेजा जाता है तो दोनों तरफ का किराया शिक्षा-संस्थान देता है और नदी या रेलवे स्टेशन से प्रशिक्षण-केन्द्र तक का मार्ग-व्यय सम्बन्धित प्रतिष्ठान देता है। प्रशिक्षार्थी को रहने के लिए स्थान, बिस्तर, ऊपरी ओढ़ना-बिछाना और जूते मुफ्त दिये जाते हैं। छात्र-वृत्ति के अतिरिक्त, उसे मार्ग-व्यय दिया जाता है और अभ्यासगत प्रशिक्षण के दौरान में वह टर्नर, फोरमैन या टेक्नीशियन आदि का जो भी काम करता है, उसका वेतन मिलता है।

प्रत्येक उच्चतर विद्यालय में चिकित्सा सम्बन्धी सहायता खुद शिक्षा-संस्थान के खर्चे पर और राजकीय बीमा योजना से मिलती है। अगर विद्यार्थी बीमारी के कारण अस्थायी रूप से अक्षम हो जाता है तो छात्र-वृत्ति बंद नहीं की जाती। उदाहरणार्थ, मास्को विश्वविद्यालय में अस्पताल से बाहर रहने वाले रोगियों के लिए एक विशेष अस्पताल है, जिसमें २६ परामर्श-कक्ष, ३ एक्सरे प्रयोगशालाएँ, २ परीक्षण प्रयोगशालाएँ, और

२ भैषज शास्त्र प्रयोगशालाएँ हैं। ४०० शय्याओं का एक अस्पताल और एक जल-चिकित्सा प्रतिष्ठान का निर्माण हो रहा है ।

उपप्रधान डॉक्टर एन० म्यागकी कहते हैं, "विश्वविद्यालय चिकित्सालय, विस्तृत रूप से रोगोन्मूलन कार्य करता है। प्रथम, द्वितीय और तृतीय वर्ष के समस्त विद्यार्थी चिकित्सालय की डॉक्टरी देख-रेख में रहते हैं; इससे हमें यह पता चल जाता है कि मैट्रिक काल में और प्रथम दो वर्षों में किन छात्रों को दवादारू की सहायता की आवश्यकता है और हम उन्हें लगातार डॉक्टरी देख-रेख में रख लेते हैं ।

"चिकित्सालय का शारीरिक स्वास्थ्य विभाग, नियमित समय पर, उन विद्यार्थियों की परीक्षा करता है जो खेल-कूद में भाग लेते हैं। खेल-कूद के प्रशिक्षण या उनके समारोह के समय, वे बराबर डॉक्टर के निरीक्षण में रहते हैं। संक्रामक रोगों के खिलाफ़ व्यवस्थित रूप में रोगहारी इंजेक्शन लगाये जाते हैं। मास्को के राजकीय विश्वविद्यालय के जिन छात्रों को दवादारू की आवश्यकता होती है, उन्हें विश्वविद्यालय के चिकित्सालय की सिफ़ारिश पर सेनेटोरियम में या विश्राम-केन्द्रों में भेजा जा सकता है।"

राजधानी की तरह, अन्य नगरों के उच्चतर विद्यालयों में भी बाहर रहकर इलाज कराने वाले विद्यार्थियों के लिए अपने चिकित्सालय, डॉक्टरी कार्यालय, आदि होते हैं। उदाहरणार्थ, रोस्तोव-ऑन-दोन के रेलवे यातायात इंजीनियरी संस्थान के चिकित्सालय के साथ मिट्टी-स्नान और जल-चिकित्सा के प्रतिष्ठान भी सम्बद्ध हैं।

कुछ संस्थानों में विशेष रात्रि-सेनेटोरियम हैं, जिनमें रिआयती दर पर विद्यार्थियों को उनके ट्रेड यूनियन संगठन भेजते हैं : ३० फ़ीसदी खर्चा विद्यार्थी देता है और शेष ट्रेड यूनियन देती है। संकटपूर्ण आवश्यक स्थिति में निवास-सुविधा मुफ़्त भी मिल जाती है। इन रात्रि-सेनेटोरियमों को, विद्यार्थी अपने अध्ययन में व्यवधान डाले बिना, लगातार २४ दिन तक के लिए प्राप्त कर सकते हैं। यूराल्स बहु-प्रावि-

धिक संस्थान के पास इस प्रकार का रात्रि-सेनेटोरियम बहुत समय से है। नित्य की तरह अपना पठन-पाठन जारी रखते हुए, शेष समय में रोगी डॉक्टर की देख-रेख में रहते हैं; उन्हें विशेष पथ्य और चिकित्सा प्रदान की जाती है। लेनिनग्राद रेलवे इंजीनियरी संस्थान, ल्वोव बहु-प्राविधिक संस्थान, मास्को विद्युत् इंजीनियरी संस्थान तथा अनेक उच्चतर विद्यालयों के विद्यार्थियों में ये रात्रि-सेनेटोरियम अत्यन्त लोकप्रिय हैं।

छुट्टियों में विद्यार्थियों को, उनके मनोरंजन-कार्यक्रम की व्यवस्था करने में, ट्रेड यूनियनें और सार्वजनिक स्वास्थ्य विभाग बड़ी सहायता पहुँचाते हैं। क्रीमिया, काकेशस, मास्को के परवर्ती क्षेत्रों, कारेलिन भूडमरूमध्य, वोल्गा क्षेत्र, यूराल, साइबेरिया, सुदूर पूर्व और केन्द्रीय एशिया के विश्राम-गृहों और सेनेटोरियमों में जाकर रहने के लिए हजारों टिकट मुफ़्त बाँटे जाते हैं या रिआयती (क़ीमत की ३० फ़ीसदी) दर पर दिये जाते हैं।

किन्तु अनेक विद्यार्थी अपनी ग्रीष्मकालीन छुट्टियाँ ऐसे कैम्पों में बिताना पसन्द करते हैं जो विद्यार्थी खेल-कूद कैम्प कहलाते हैं। पिछले कुछ वर्षों में ये कैम्प सोवियत-संघ में विशेष रूप से व्यापक हो गए हैं। मास्को उड्डयन संस्थान का खेल-कूद कैम्प मास्को के निकटवर्ती क्षेत्र में एक मनोहारी बन में स्थित है। पास में बास्केटबाल का मैदान है। तैरने के तालाब पर गोता लगाने का स्थान, कूदने का स्थान, और तैराकी प्रतियोगिताओं के लिए आवश्यक साज-सामान हैं। वहाँ वालीबाल और टैनिस के मैदान, एक खुली व्यायामशाला, दौड़ का मार्ग, कूद का मैदान, गोलन्दाजी का स्थान और एक फुटबाल का मैदान है।

१९५५ में जो ६०० से अधिक विद्यार्थी खिलाड़ी इस कैम्प में आये, उन्होंने विभिन्न खेल-कूदों में हिस्सा और पड़ोस की झीलों में एक या दो दिन तक पर्यटन किया। अन्य मनोरंजनों की भी यहाँ कमी न थी। मास्को के संगीतकारों के एक दल ने उनके लिए संगीत कार्यक्रम पेश किया। फिल्में दिखाई गईं और अनेक व्याख्यान तथा वाद-विवाद

मास्को कान्ज़र्वेटरी के छात्रावास में संध्या के समय। छात्र चाय पीते हुए गपशप करते हैं। सुई-यिक (बायें खड़ी हुई) अपने मित्रों को प्रायः चीनी जादू के पेचीले खेल दिखाती है।

मास्को विश्वविद्यालय के छात्रावास के रसोईघर में । भूगोल विभाग की छात्रा इरीना बेसोनोवा (बायीं ओर) और मार्गरित बोन्दारेवा रविवार को अपना नाश्ता पका रही हैं।

आयोजित किये गए। अक्सर सान्ध्य-संगीत और नृत्य का कार्यक्रम होता था। और अन्तिम, किन्तु किसी प्रकार न्यून नहीं, श्रेष्ठ खिलाड़ियों के कार्यों का प्रदर्शन भी था। अन्ततः विद्यार्थी ताजे होकर और आराम कर अपने संस्थान को लौट गए। अन्य शिक्षा-संस्थाओं द्वारा भी इसी प्रकार के कैम्प संगठित किये गए।

इन कैम्पों का आयोजन कोम्सोमोल (युवक संगठन) और ट्रेड यूनियनों के अलावा विद्यार्थियों के खेल-कूद क्लबों की ओर से भी होता है। व्यवस्था का व्यय और परीक्षकों का वेतन सामान्यतः संस्थानों के प्रशासन की ओर से दिया जाता है। इसके अलावा विद्यार्थियों के खेल-कूद क्लब ही इन कैम्पों के लिए निमंत्रण देते हैं। इनके प्रबन्ध के लिए ट्रेड यूनियन संगठन आर्थिक सहायता देते हैं, और इसलिए कैम्पों के लिए प्रवेश-पत्र कम कीमत पर बेचे जा सकते हैं और जिनकी स्थिति अच्छी न हो, उन्हें मुफ़्त भी दिये जा सकते हैं।

विद्यार्थियों में पर्यटन-वृत्ति अत्यन्त विकसित है। ग्रीष्मकाल में लाखों विद्यार्थी पर्यटन-टिकट लेकर लम्बी यात्राएँ और पर्यटन करते हैं और काकेशस, क्रीमिया, अल्ताई, यूराल्स तथा अन्य प्रसिद्ध और आकर्षक दिशाओं में भ्रमण करते हैं। खेल-कूद क्लबों के पर्यटन-विभाग द्वारा ये टिकट ७० प्रतिशत कटौती पर बेचे जाते हैं; बाकी पैसा ट्रेड यूनियनें देती हैं।

विद्यार्थियों का अवकाश कार्यक्रम

विद्यालय के वर्षों का काल ऐसा होता है, जब युवक-युवतियाँ ज्ञान संचित करते हैं, अपना चरित्र और नैतिक दृष्टिकोण बनाते हैं। उच्चतर विद्यालय उन्हें अपना जीवन और अध्ययन इस प्रकार संगठित करने में मदद करते हैं कि उससे, स्नातक बन जाने के बाद, अपने चुने हुए क्षेत्र में स्वतन्त्र कार्य करने के लिए वे पूरी तरह तैयार हो जायँ और ऐसे व्यापक दृष्टिकोण से लैस हो जायँ जो नये जीवन के निर्माण में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए अत्यन्त आवश्यक होता है।

विद्यार्थियों का सैद्धान्तिक और सांस्कृतिक स्तर ऊँचा उठाने में विद्यार्थियों की सामूहिक सांस्कृतिक क्रियाशीलता बड़ी जीवन्त शक्ति होती है। उदाहरणार्थ, मास्को राज्य विश्वविद्यालय का व्याख्यान विभाग इस सम्बन्ध में अपनी लोकप्रियता का पात्र है। यहाँ १९५५-५६ के विद्यालयी वर्ष में अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति, विदेशों की अर्थ-व्यवस्थाओं, उनकी संस्कृति और इतिहास के विषय में व्याख्यानमालाएँ आयोजित हुईं। प्रमुख रूसी लेखकों, कलाकारों और संगीतकारों के सम्बन्ध में भी कई व्याख्यान दिये गए।

मास्को उच्चतर प्राविधिक विद्यालय के क्लब द्वारा एक सांस्कृतिक युवक-'विश्वविद्यालय' भी संगठित किया गया है। युवकों को उनके अवकाश-काल में, यह संस्था ज़बर्दस्त रूप से आकर्षित करती है। वे यहाँ

विशिष्ट कलाकारों और लेखकों के जीवन और कृतित्व के विषय में अनुष्ठित व्याख्यानों, संगीत-आयोजनों और सांध्य-सामाजिक समारोहों में भाग लेने आते हैं। 'विदेशों में संगीत-नाट्य' शीर्षक एक व्याख्यान-संगीतमाला में बड़ी दिलचस्पी पैदा हुई। इस संस्था की विशेषता है विद्यार्थियों और लेखकों तथा कला-जगत् के प्रमुख नर-नारियों के विशेष सम्मेलन। कज़ाक सोवियत समाजवादी जनतन्त्र के अक्त्युबिन्स्क अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान में विद्यार्थियों का व्याख्यान-विभाग वर्षों से बढ़िया काम कर रहा है। इरकुत्स्क राज्य विश्वविद्यालय के विद्यार्थी क्लब द्वारा भी इसी प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। चाकलोव नगर के चिकित्सा-संस्थान में व्याख्यान-संगीत आयोजनों के लिए एक विशेष भवन है। देश के अन्य उच्चतर विद्यालयों के विषय में भी यही बात सही है।

ज्ञान और संस्कृति के प्रसार में, उच्चतर विद्यालयों तथा प्रमुख छात्रावासों में संचालित रेडियो-केन्द्र भी कोई कम महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा नहीं करते। उदाहरणार्थ, मोलोतोव विश्वविद्यालय के छात्रों को, १९५५-५६ के विद्यालयी वर्ष के प्रथम सत्र में, न सिर्फ़ विज्ञान के सम्बन्ध में प्रसारण सुनने का अवसर मिला, बल्कि उन्हें अनेक संगीतकारों के जीवन और कृतित्व और बीथोवन, शुबर्ट, ग्रीग, चोपिन, सेंट साइन्स जैसे संगीतकारों से परिचय प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ।

प्रत्येक सोमवार को विश्वविद्यालय के शौकिया कलाकारों की कृतियाँ प्रसारित होती हैं, मंगलवार को संगीत-शिक्षण कार्यक्रम प्रसारित होते हैं, आदि। विशेष रूप से लोकप्रिय, विद्यार्थियों द्वारा अनुरोधित कार्यक्रम, प्रत्येक शनिवार को प्रसारित किये जाते हैं।

विद्यार्थियों के लिए समाचारपत्र और पत्रिकाएँ भी महत्त्वपूर्ण हैं। प्रमुख युवक समाचारपत्रों और पत्रिकाओं के स्तम्भों में, और ज़िला, क्षेत्रीय और जनतन्त्रीय अख़बारों में भी, छात्रों की दिलचस्पी के अनेक प्रश्नों पर प्रकाश डाला जाता है। कई विश्वविद्यालय खुद अपने सुमुद्रित

समाचारपत्र प्रकाशित करते हैं। इनके अतिरिक्त, विभिन्न निकायों, पाठ्यक्रमों और विद्यार्थी-दलों द्वारा हज़ारों दीवार-पत्र भी तैयार किये जाते हैं। देश के सबसे पुराने छात्र-समाचारपत्र 'तिमिर्याज़ेवेत्स' ने, जो अब मास्को कृषि अकादमी द्वारा प्रकाशित किया जाता है, हाल में अपनी तीसवीं वर्षगाँठ मनाई। इस मुखपत्र के लिए, जिसने अगणित सोवियत कृषि-विशेषज्ञों के प्रशिक्षण में सचमुच ही महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है, अनेक अकादमीशियन, प्राध्यापक और विद्यार्थी सक्रिय योग-दान करते हैं।

अपने अनुभव का आदान-प्रदान करने और सामयिक प्रश्नों पर विचार-विमर्श करने के लिए, छात्र-समाचारों के सम्पादकीय विभाग नियमित रूप से आपसी बैठकें करते हैं। मई १६५६ में मास्को के छात्र-समाचारपत्रों के सम्पादकों और सम्पादकीय सहकारियों का एक बड़ा सम्मेलन हुआ था। निर्माण इंजीनियरी संस्थान, मशीनी औज़ार संस्थान और लकड़ी-ईंधन संस्थान के पत्रों को पुरस्कार दिये गए। लिथुआनिया के कौनस नगर में छात्र-समाचारपत्रों की प्रदर्शनी के बाद सम्पादकों की अखिल जनतंत्रीय विचार-विमर्श गोष्टी हुई, जिसमें सर्वोत्तम सम्पादकीय विभागों के काम पर विस्तृत रूप में विचार-विमर्श हुआ। विद्यार्थियों के अखबारों में अंतर्राष्ट्रीय सम्पर्कों की समस्या अधिकाधिक प्रमुख रूप से उपलक्षित होती है। सोवियत और विदेशी छात्रों का पत्र-व्यवहार नियमित रूप से प्रकाशित होता है। लेनिनग्राद का हर्ज़न अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान का पत्र 'सोवियत्स्की उचितल' (सोवियत अध्यापक), वारसा के अध्यापक प्रशिक्षण उच्चतर विद्यालय के मुखपत्र 'म्लोदी नौज़ीसियल' (युवक अध्यापक) से, चीन के युवक पत्र 'चुंगकुओ चिंगनीयनपाओ' (जनवादी युवक) से, बर्लिन के हम्बोल्त विश्वविद्यालय के समाचारपत्र से तथा अन्य छात्र-समाचारपत्रों से पत्र-व्यवहार करता है। लेनिनग्राद संस्थान में अध्ययन करने वाले अनेक जातियों के विद्यार्थी इस पत्र-व्यवहार में भाग लेते हैं।

जैसा कि विदित है, जीवन के प्रति विद्यार्थियों का उल्लासपूर्ण दृष्टिकोण होता है। इसलिए यह कोई आकस्मिक नहीं है कि उनके बीच शौकिया कला विशेष रूप से लोकप्रिय है।

सोवियत संघ में कोई ऐसा उच्चतर विद्यालय नहीं मिलेगा जिसमें उसके अपने कविता-वाचक, संगीतकार और नृत्यकार न हों। ये शौकिया कलाकार बहुधा समवेत गानों, समवेत वादनों, गीत और नृत्य कार्यक्रमों में सामूहिक कला-प्रदर्शकों के रूप में सहयोग देते हैं। सर्वोत्तम कलाकारों, संचालकों और नाटक-निर्देशकों को छात्रों के काम का निर्देशन करने के लिए निमन्त्रित किया जाता है। ऐसी मण्डलियों के संगठन में जो खर्चा होता है, उसे सामान्यतः ट्रेड यूनियनें और छात्र-क्लब बरदाश्त करते हैं।

लेनिनग्राद विश्वविद्यालय में वर्षों से विद्यार्थियों की अपनी वाद्य-संगीत-मण्डली है। हाल में विद्यार्थी संगीतज्ञों की इस मण्डली ने क्षेत्रीय शौकिया कला प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया था।

'जब मित्र मिलते हैं' शीर्षक एक गीत-नृत्य कृति की, जो विद्युत् इंजीनियरी संस्थान के ४०० विद्यार्थियों द्वारा पेश की गई थी, मास्को की क्षेत्रीय प्रतियोगिता में अत्यन्त सराहना की गई थी। इस रचना का मूलभूत भाव है सारी दुनिया के विद्यार्थियों का बिरादराना भाईचारा। इस मण्डली के सदस्य—उक्त संस्थान के विद्यार्थी—चूँकि स्व ' सोवियित संघ, चीन, बुल्गारिया, रूमानिया, पोलैण्ड और अन्य लोक-जनतन्त्रों से आते हैं, इसलिए वे स्वयं इस मूलभूत भाव के मूर्तरूप हैं।

जातीय जनतन्त्रों के विद्यार्थियों में भी शौकिया कला-प्रदर्शन व्यापक रूप से प्रचलित है। येरेवन अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान का समवेतगान और तन्तु-वाद्य-यन्त्रों का समवेत वादन, आर्मीनिया में दीर्घकाल से विख्यात है। हाल में यहाँ लोकप्रिय संगीत का समवेत वादन भी संगठित किया गया। कुछ विद्यार्थी संगीतकार अच्छे गीतकार भी सिद्ध हुए हैं।

युद्ध के बाद से, उच्चतर विद्यालयों के विद्यार्थियों द्वारा शौकिया-कला के अन्तर्राष्ट्रीय सान्ध्य-समारोह अधिकाधिक बार संगठित किये गए हैं। 'हम विभिन्न देशों से आये हैं' नाम दिया गया था विद्यार्थियों की मैत्री के नाम समर्पित, लेनिनग्राद विश्वविद्यालय के संगीत-कार्यक्रम को। इस संगीत-कार्यक्रम का उद्‌घाटन, भाषा-विज्ञान विभाग की एक छात्रा, लोरा बेयर द्वारा किया गया था (वे जर्मन जनवादी जनतन्त्र से लेनिनग्राद आई थीं)। जर्मन विद्यार्थियों के एक समवेत गान से श्रोतागण जर्मनी के लोक-गीतों के ैभव से परिचित हुए। उसके बाद वितोल्ड देयवस्की ने अपने श्रोताओं को पोलैण्ड में समाजवाद का निर्माण करने वाले नौजवानों के गौरवशाली श्रम के विषय में बताया, और जादविगा बुर्ज़िन्सका ने आदम मिकीविज की कविता 'रूसी मित्रों के प्रति' का पाठ किया। चीनी विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट कुशलता के साथ 'चाय-चयन' नृत्य किया और अल्बानियन बल्गारियन समवेत गीतों के कार्यक्रमों का सोवियत श्रोताओं द्वारा हार्दिक स्वागत किया गया।

सोवियत विद्यार्थी अब अखिल संघीय युवक समारोह की तैयारियों में जुटे हुए हैं, जो सितम्बर १९५६ में शुरू हुआ था और मई १९५७ तक चलेगा। यह समारोह कोम्सोमोल (युवक-संगठन) की केन्द्रीय कमेटी, ट्रेड यूनियनों की अखिल संघीय केन्द्रीय कौंसिल और सोवियत संघ के सांस्कृतिक मन्त्रालय द्वारा, नौजवानों को और अधिक मनोरंजन प्रदान करने और व्यापक सांस्कृतिक कार्य की ओर उन्हें प्रभावशाली रूप में आकर्षित करने के लिए, आयोजित किया गया है। स्वयं यह समारोह भी युवकों और विद्यार्थियों के छठे विश्व-समारोह की तैयारी का एक अंग होगा जो १९५७ में मास्को में होने जा रहा है।

सचमुच, नौजवानों के लिए विश्राम और सांस्कृतिक विकास के एकमात्र साधन ये शौकिया कार्यक्रम ही नहीं हैं। वे अक्सर थियेटर जाते हैं, सिनेमा देखते हैं, संग्रहालयों और प्रदर्शनियों का निरीक्षण करते हैं। विद्यार्थी संगठन अक्सर संगीत कार्यक्रम और साहित्य-पाठ भी संगठित

करते हैं। 'पॉलिटेकनिक' समाचारपत्र की विद्यार्थी साहित्य-समिति समय-समय पर लेनिनग्राद में काव्य-सान्ध्य-समारोह संगठित करती है।

छुट्टियों में मनोविनोद के साधन अनेक और विविध हैं। परीक्षा की समाप्ति को, सांस्कृतिक तथा विश्रामार्थ उद्यानों आदि में, समारोहों तथा आनन्दोत्सवों द्वारा मनाया जाता है। अनेक विद्यार्थी विश्राम-गृहों और सेनेटोरियमों में चले जाते हैं, अपने माता-पिता से मिलने जाते हैं, देश-भ्रमण करते हैं, पर्यटन के लिए निकलते हैं और खेल-कूद के आयोजनों में भाग लेते हैं। छुट्टियों के दिनों में रेलवे स्टेशनों पर विशेष टिकटघर कायम किये जाते हैं और रेलवे मन्त्रालय द्वारा अतिरिक्त रेलगाड़ियाँ चलाई जाती हैं।

विभिन्न सोवियत जनतन्त्रों के विद्यार्थियों की आपसी मैत्री-यात्राएँ शीतकालीन छुट्टियों की एक परम्परा बन गई हैं।

जनवरी १९५६ में जब तिबलिसी बहु-प्राविधिक संस्थान (ज्यार्जिया) के छात्र मास्को आये, तो उन्होंने अपनी लोकप्रिय संगीत-मण्डलियों के संगीत-कार्यक्रम मास्कोवासियों के सामने पेश किये। तिबलिसी विश्वविद्यालय के समवेतवादन और गीत तथा नृत्य-मण्डली ने कीव के विद्यार्थियों से भेंट की और उधर कीव विश्वविद्यालय की एक संगीत-मण्डली का मास्को में हार्दिक स्वागत किया गया।

अज़रबैजान विश्वविद्यालय और दागिस्तान अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान के विद्यार्थियों के बीच मैत्री-यात्राओं का विनिमय हुआ। कज़ाक विद्यार्थी ताशकंद गये तो उज़बेक विद्यार्थी अलमा-अता आये। ये विद्यार्थी सम्मेलन शतरंज प्रतियोगिताओं, शौकिया कला-कार्यक्रमों और आसपास के क्षेत्रों के पर्यटनों से सजीव हो उठे। लेनिनग्राद के विद्यार्थियों ने विशेष रूप से बड़ी संख्या में अतिथियों का आतिथ्य-सत्कार किया। यहाँ मास्को और कज़ान, पेत्रोज़ावोद्स्क और रीगा, सारातोव और विलनियस, रोस्तोव-ऑन-दोन और ल्वोव, गोर्की, कीव, तारतू, खारकोव और हेलसिंकी तक के विश्वविद्यालयों से लगभग ४० जातियों के विद्यार्थी आये। अतिथियों

ने स्मृति-कुटीर और रूसी संग्रहालय जैसे बहुमूल्य भवन तथा साथ ही नगर के थियेटर और औद्योगिक प्रतिष्टान भी देखे। छुट्टियाँ बड़ी शीघ्रता-पूर्वक और आनन्दपूर्वक बीत गईं, जिनका अंत संस्कृति महल में १३ विश्वविद्यालयों के छात्रों द्वारा आयोजित मैत्री-संध्या और अंतिम संगीत-कार्यक्रम तथा नृत्य के साथ किया गया।

* * *

विद्यार्थी बड़े लगनशील और उत्साही खिलाड़ी हैं। खेल-कूद के अभ्यास (शारीरिक व्यायाम) प्रथम और द्वितीय वर्ष में अनिवार्य और उच्च वर्षों के विद्यार्थियों के लिए वैकल्पिक हैं।

शारीरिक व्यायाम विभाग अपने निर्देशकों और प्रशिक्षकों समेत, हलकी कसरतों, बर्फ पर चलने के खेलों, जिमनास्टिक, तैराकी आदि के उपविभागों में विभक्त हैं। फिर ये उपविभाग, विद्यार्थियों की शारीरिक स्थिति और खेल-कूद सम्बन्धी उनकी पिछली क्रियाशीलताओं को ध्यान में रखकर, उनके विभिन्न दल संगठित करते हैं। १२ से १४ विद्यार्थियों के दल में नवसिखुए रखे जाते हैं और हर दल का प्रधान एक निर्देशक होता है। सप्ताह में दो बार दो घण्टे व्यायाम-अभ्यास कराये जाते हैं। प्रथम श्रेणी के खिलाड़ियों और खेल-कूद में निष्णात विद्यार्थियों के दल में छः से अधिक सदस्य नहीं होते और उनके प्रधान भी निर्देशक होते हैं तथा वे हफ़्ते में चार बार व्यायाम के लिए जुड़ते हैं।

हीन स्वास्थ्य वाले विद्यार्थियों के विशेष समूह बनाये जाते हैं, जिनके लिए उनका अपना कार्यक्रम होता है। हर विद्यार्थी, जो खेल-कूद में भाग लेता है, बराबर डॉक्टरी देख-रेख में रहता है।

हाल के वर्षों में विद्यार्थियों के अन्दर खिलाड़ियों की संख्या कई गुनी बढ़ी है—इनमें से २,००,००० से अधिक तो सोवियत-संघ के खेल-कूदों में अधिकृत रूप से वर्गीकृत हैं। इनमें से १,००० से अधिक छात्र खेल-कूद में निष्णात हैं। अनेक विद्यार्थी सोवियत-संघ की टीमों में खेलते हैं और अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं।

ग्रीष्म और शीतकाल की छुट्टियों में, उच्चतर शिक्षा-मन्त्रालय और 'बुरेवेस्तनिक' (तूफ़ानी पंछी) खेल-कूद समिति, अखिल संघीय विद्यार्थी प्रतियोगिताएँ और स्पार्टक्वाड आयोजित करते हैं, जिनके पहले विश्व-विद्यालयी, शहरी, क्षेत्रीय और जनतन्त्रीय प्रतियोगिताएँ होती हैं जिनमें हज़ारों-लाखों विद्यार्थी भाग लेते हैं ।

१९५५ के ग्रीष्मकाल में अखिल संघीय विद्यार्थी स्पार्टक्वाड में, जिसमें बास्कट-बॉल, वालीबॉल, पटेबाजी, कुश्ती प्रतियोगिताएँ और बाइसिकल दौड़ शामिल थी, भाग लेने के लिए दो हजार सर्वोत्तम विद्यार्थी खिलाड़ी लेनिनग्राद आये थे। मास्को उड्डयन संस्थान, तालिन्न बहु-प्राविधिक संस्थान, तारतू विश्वविद्यालय और मास्को उच्चतर प्राविधिक विद्यालय की टीमों के फल सर्वोत्तम रहे ।

अखिल सघीय शीतकालीन विद्यार्थी खेल-कूद प्रतियोगिता जनवरी और फरवरी १९५६ में हुई थी, जिसमें निम्न खेल भी शामिल थे : बर्फ़ पर फिसलते चलने की कला, तीव्र स्केटिंग (पहियेदार जूते पहनकर बर्फ़ पर दौड़), हलके व्यायाम और कुश्ती । बर्फ़ पर फिसलने और पहियेदार जूते पहनकर दौड़ने की कला में विद्यार्थियों ने जैसी सफलताएँ प्राप्त कीं, उनके लिए सुदृढ़ इच्छा-शक्ति, सहनशीलता और सूक्ष्म प्रशिक्षण की आवश्यकता थी। ४८ टीमों में से बर्फ़ पर फिसलने की कला में यूराल्स बहु-प्राविधिक संस्थान और पहियेदार जूते पहनकर दौड़ने की कला में मास्को विद्युत् इंजीनियरी संस्थान अग्रगण्य थे। १४ टीमों की ट्रैक-एण्ड-फील्ड प्रतियोगिता सोची में हुई, जिसमें लेनिनग्राद विश्वविद्यालय की टीम विजयी रही। कुश्ती में सर्वश्रेष्ठ स्थान लेनिनग्राद बहु-प्राविधिक संस्थान के छात्रों ने प्राप्त किये ।

इस प्रकार की प्रतियोगिताओं के आयोजन के खर्चे, यात्रा, भोजन और निवास का व्यय, उच्चतर विद्यालय और ट्रेड यूनियनों द्वारा आर्थिक सहायता पाने वाला 'बुरेवेस्तनिक' समाज अदा करते हैं ।

सोवियत संघ की जनताओं के स्पार्टक्वाड की तैयारियों से—जिसका

अन्तिम अंश अगस्त १६५६ में मास्को के नये लुज़निकी स्टेडियम में हुआ था—विद्यार्थियों में खेल-कूद की क्रियाशीलताओं को ताज़ा बल प्राप्त हुआ।

अनेक प्रकार के खेलों में, सोवियत संघ के चैम्पियन के पद विद्यार्थियों ने प्राप्त किये हैं और उनमें से कई विद्यार्थियों ने विश्व-प्रतियोगिताओं में भी ख्याति प्राप्त की। मास्को की गालिना शामराइ ने जिमनास्टिक खेलों में विश्व-चैम्पियन का पद प्राप्त किया। बर्फ़ पर फिसलने की कला में लेनिनग्राद के ब्लादिमिर कुज़िन ने और मास्को के निकोलाइ एनि-किन ने विश्व-चैम्पियन का पद और ७वें शीतकालीन ओलम्पिक खेलों के चैम्पियन का पद प्राप्त किया। कीव की नीना ओपलेंको और एकता-रीना जेम्ल्यन्स्काया ने दो पतवारों से नाव खेने में यूरोप के चैम्पियन का पद जीता। तिबलिसी का एक विद्यार्थी वख़तांग बलवाद्ज़े उन्मुक्त शैली की कुश्ती में विश्व-चैम्पियन है। मिंस्क् का एक विद्यार्थी माइखल क्रीवो-नोसोव गोला फेंकने का विश्व-चैम्पियन है। लेनिनग्राद का गेन्नादी शाकतोव मुक्केबाज़ी में यूरोपीय चैम्पियन है। स्मोलेस्क का निकोलाइ कोस्तियल्योव भारोद्वहन में विश्व-चैम्पियन है। लेनिनग्राद की गालिना पोपोवा-विनोग्रादोवा, दौड़कर लम्बी छलाँग लगाने की कला में विश्व और यूरोपीय चैम्पियन है। यह है सोवियत विद्यार्थियों में से प्रमुख खिलाड़ियों की सूची, जो किसी तरह पूरी नहीं है।

विभिन्न देशों के विद्यार्थी-खिलाड़ियों के आपसी सम्बन्ध अधिका-धिक सुदृढ़ और विस्तृततर होते जा रहे हैं। अकेले १६५६ के प्रारम्भिक छः महीनों में २८ अन्तर्राष्ट्रीय समारोहों में सोवियत विद्यार्थियों ने भाग लिया और इटली के ७वें शीतकालीन ओलम्पिक खेलों में, स्वीडन की विश्व-स्केटिंग प्रतियोगिताओं में, फ्रांस की यूनानी-रूमी कुश्ती प्रति-योगिताओं में, शतरंज में विश्व-चैम्पियन पद का प्रतिस्पर्धी निश्चित करने के लिए हॉलैण्ड के टूर्नामेंट में, शतरंज में स्वीडन के विश्व-विद्यार्थी टूर्नामेंट में और तुर्की में विश्व-कप के लिए कुश्ती टूर्नामेंट में, वे शामिल हुए। भारत और चीन में प्रदर्शनकारी प्रतियोगिताएँ आयोजित हुईं।

वे बल्गारिया, नारवे, जर्मन-जनवादी जनतन्त्र, चेकोस्लोवाकिया, डेनमार्क, यूगोस्लाविया और फिनलैण्ड की अनेक प्रतियोगिताओं में भी शामिल हुए।

मार्च १६५६ में पोलैण्ड में आयोजित विद्यार्थियों के ११वें अन्तर्राष्ट्रीय शीतकालीन खेलों में उनका व्यापक रूप में भाग लेना और भी अधिक महत्त्वपूर्ण था। उस समय १६ देशों के खिलाड़ी पोलैण्ड पहुँचे थे। बर्फ़ पर फिसलने की कला में युवक और युवतियों की प्रतियोगिताओं में, जोड़ियों में बर्फ़ पर फिसलने की कला में, बर्फ़ पर दौड़कर छलाँग मारने की कला में, और हॉकी में सोवियत विद्यार्थियों ने प्रधान स्थान प्राप्त किये, और २६ स्वर्ण पदक, ४ रजत पदक और ५ ताम्र पदक जीते। संगठन-समिति ने १६५६ के अन्तर्राष्ट्रीय विद्यार्थी चैम्पियन के पदों से २६ सोवियत खिलाड़ियों को विभूषित किया।

अन्य देशों के युवक-युवतियों से सम्बन्ध बढ़ाने के लिए उत्सुक सोवियत विद्यार्थी, अन्तर्राष्ट्रीय-छात्र-संघ (इण्टरनेशनल यूनियन ऑफ़ स्टूडैण्ट्स) की क्रियाशीलताओं में सक्रिय भाग लेते हैं और इस प्रकार विभिन्न राष्ट्रों के बीच शान्ति और मैत्री-सम्बन्ध बढ़ाते हैं।

हाल के वर्षों में ही, ७० देशों के ७०० युवक और विद्यार्थी प्रतिनिधिमण्डल सोवियत संघ आये। उधर सैकड़ों सोवियत युवक-प्रतिनिधिमण्डलों ने अनेक बाहरी राष्ट्रों की यात्रा की।

कृषि-विज्ञान के उच्चतर विद्यालयों के विद्यार्थियों की एक अन्तर्राष्ट्रीय विचार-विमर्श गोष्टी, जून १६५५ में, मास्को की सोवियत-संघीय कृषि-प्रदर्शनी में आयोजित हुई थी, जिसमें २४ देशों के छात्रों ने भाग लिया। इस गोष्ठी में प्रमुख सोवियत तथा विदेशी वैज्ञानिकों ने व्याख्यान दिये। अनेक प्रसंगों में न सिर्फ वैज्ञानिक समस्याओं के विषय में, बल्कि विद्यार्थियों के बीच और अधिक सहयोग बढ़ाने के साधनों और उपायों पर भी गहरी बहस हुई। इसके बाद अतिथियों ने मास्को के निकटस्थ सामूहिक खेतों, मशीन-ट्रैक्टर केन्द्रों और राजकीय फार्मों का निरीक्षण

किया। उनकी प्रतिक्रिया देखकर यह पता चलता है कि वे इस गोष्ठी से भली-भाँति सन्तुष्ट हुए, सोवियत-संघ की कृषि-सम्बन्धी सफलताओं और सोवियत उच्चतर विद्यालयों की प्रशिक्षण-पद्धति का परिचय प्राप्त कर प्रसन्न हुए।

सोवियत-विद्यार्थियों की पहल से, १९५६ में, डॉक्टरी-विद्यार्थियों की एक अन्तर्राष्ट्रीय विचार-विमर्श गोष्ठी हुई और इसकी ओर ३० विभिन्न देशों के अतिथि आकृष्ट हुए।

साथ ही, सोवियत और विदेशी उच्चतर विद्यालयों तथा विद्यार्थी-संगठनों ने व्यक्तिगत रूप से अपने सम्पर्क गहरे बनाये। लेनिनग्राद हर्जन अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान ने, मार्च १९५६ में, स्विट्ज़रलैण्ड के विद्यार्थियों के प्रतिनिधि-मण्डल को निमन्त्रित किया। रौमा (फिनलैण्ड) के अध्यापक प्रशिक्षण-संस्थान के फ़िन-विद्यार्थियों का एक प्रतिनिधि-मण्डल अप्रेल में सोवियत-संघ आया। शीघ्र ही लेनिनग्राद के विद्यार्थी भी फ़िनलैण्ड की प्रति-यात्रा करेंगे।

सोवियत युवकों की फासिस्ट-विरोधी कमेटी के निमन्त्रण पर अफ्रीकी विद्यार्थियों का एक दल भी सोवियत-संघ आया था।

उधर सोवियत विद्यार्थियों को फ्रांसीसी विद्यार्थियों के राष्ट्रीय संघ ने, लिले में आयोजित, चौथे अन्तर्राष्ट्रीय कला-उत्सव में भाग लेने के लिए निमन्त्रित किया।

इस तरह के अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं। सोवियत और विदेशी छात्रों के आपसी सम्बन्ध केवल प्रतिनिधि-मण्डलों की यात्रा-प्रतियात्रा तक ही सीमित नहीं हैं। एक पुरानी चीनी कहावत है, "मित्रों के बिना लोग ऐसे होते हैं, जैसे फूलों के बिना बहार!" और सचमुच मित्रहीन व्यक्ति की कल्पना करना कठिन है। दुनिया के सभी देशों में उसके जितने अधिक मित्र हों, उतना ही बेहतर है। पृथ्वी के विभिन्न भागों में बसने और विभिन्न भाषाएँ बोलने वाले नौजवान एक ही आकांक्षा से एकताबद्ध हैं और वह यह कि : शान्ति और मैत्री

के साथ रहें, निर्विघ्न रूप से अपना अध्ययन जारी रख सकें और काम कर सकें, उनके अपने देश उनके श्रम से लाभान्वित हों। यही कारण है कि सोवियत और विदेशी विद्यार्थियों के आपसी सम्बन्ध और भी विविध तथा और भी शक्तिवान होते जा रहे हैं। लेनिनग्राद विश्वविद्यालय के अनेक छात्र पोलैण्ड, जर्मनी, इटली, फ्रांस तथा अन्य देशों के अपने मित्रों से पत्र-व्यवहार करते हैं। उदाहरणार्थ, सर्जी सोरोकिन, लुबलिन-विश्वविद्यालय के एक छात्र तोमज़ जानोवस्की से पत्र-व्यवहार करती है। वे अपने अध्ययन के विषय में विचार-विमर्श करते हैं, नई पुस्तकों के बारे में विचार-विनिमय करते हैं, आदि।

पत्रकार विभाग के छात्र वेलेन्तिन सोकोलोव और ब्लादिमिर फ़िलिमोनोव ने चेम्ब्रों (हॉते-लायर) के दर्शन-विभाग के फ्रांसीसी विद्यार्थियों से दिलचस्प पत्र-व्यवहार शुरू किया। ईवलाइन वरक्यूलर ने अपने साहित्य-अध्ययन के विषय में फ़िलिमोनोव को लिखा कि हाल में उसने टॉल्स्टाय, दोस्तोयवस्की और गोर्की की विभिन्न रचनाएँ पढ़ी थीं। फ़िलिमोनोव ने, अपनी ओर से, अपने उत्तर के साथ अनेक सोवियत-लेखकों की कृतियों के अनुवाद भेजे।

स्वेतलाना वोलोविक और स्वेतलाना वुशुयेवा, नेपिल्स, रोम, अन्कोना और मिलान के इटालियन मित्रों से पत्र-व्यवहार करते हैं।

विदेशों के साथी विद्यार्थियों से सिर्फ़ मास्को और लेनिनग्राद के छात्र ही पत्र-व्यवहार नहीं करते। वोरोशिलोवग्राद अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान, डानबॉस, क्षेत्र के विद्यार्थी अपने ब्रिटिश साथी विद्यार्थियों से पत्र-व्यवहार करते हैं। एक ब्रिटिश विद्यार्थी ने अपने एक पत्र में लिखा था : "हम रूसी भाषा का अध्ययन कर रहे हैं और अपनी उम्र के अँग्रेजी जानने वाले छात्रों से पत्र-व्यवहार करना चाहेंगे।" उसने इन्हीं सामान्य शब्दों के साथ अपने पत्र का अन्त किया था : "तुम्हारा सुहृद मित्र सेन्निट।" भौतिक विज्ञान और गणित विभाग के द्वितीय वर्ष के विद्यार्थी वेलेन्तिन वोरोनिन ने अँग्रेजी में पत्र लिखा और सुझाव दिया :

"तुम मुझे रूसी में लिखो और मैं अँग्रेजी में जवाब दूँगा। तुम्हारा मित्र वी० वोरोनिन।"

इतिहास और भाषा-विज्ञान विभाग के विद्यार्थियों को हाल में मैत्री-पूर्ण भारत से एक पत्र मिला : "मैं रूसी जनता को पसन्द करता हूँ और सोवियत विद्यार्थियों से पत्र-व्यवहार करने में मुझे प्रसन्नता होगी। आपके साथ व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित करके हमें बड़ा आनन्द मिलता है। आपका भारतीय भाई, एच० पंचहोल्ली।"

विद्यार्थियों ने उत्तर दिया : "प्रिय भाई एच० पंचहोल्ली, हमें प्रसन्नता है कि हर देश में हमारे बढ़िया दोस्त हैं और आपको पत्र लिखने में हमें बड़ी प्रसन्नता होगी।" इसके बाद उन्होंने अपने पत्र में अपने जीवन, अध्ययन और युवकों की दिलचस्पी की अनेक समस्याओं पर विचार प्रगट किये थे।

व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित करने और मैत्री दृढ़ करने के लिए, विभिन्न देशों के बीच विद्यार्थियों का विनिमय एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण साधन है।

सोवियत संघ के उच्चतर विद्यालयों ने विदेशी विद्यार्थियों के अनेक पत्र प्राप्त किये, जिनमें अध्ययन के लिए सोवियत संघ आने की आकांक्षा व्यक्त की गई थी। उनकी आकांक्षा पूर्ण करने के लिए सोवियत भूमि ने विदेशी अतिथियों के लिए अपने विश्वविद्यालयों और संस्थानों के द्वार खोल दिए। मास्को, लेनिनग्राद, खारकोव, कीव, सारातोव, स्वेर्दलोवस्क, ताशकंद तथा सोवियत संघ के अन्य नगरों के उच्चतर विद्यालय १२,००० से अधिक विदेशी विद्यार्थियों को प्रशिक्षित कर रहे हैं और उनमें लोक-जनतंत्रों के भी १,५०० अधिस्नातक अध्ययन कर रहे हैं। न सिर्फ चीन, हंगरी, पोलैंड, बल्गारिया, कोरिया तथा अन्य लोक-जनतंत्रों के नौजवान यहाँ विद्यार्थी हैं, बल्कि फ्रांस, नारवे, भारत, फिनलैंड और इटली से भी आये हैं। १९५६ में मास्को के उच्चतर विद्यालयों से, जिनकी प्रशिक्षण नामावली में लगभग ६,००० विदेशी

पोलिश युवक और युवतियाँ जो मास्को के उच्चतर शिक्षा-संस्थानों के छात्र और छात्राएँ हैं, सोवियत छात्र और छात्राओं के साथ जाड़ों की छुट्टियों के समय ग्रैण्ड क्रेमलिन प्रासाद के एक वॉल में आनन्द मना रहे हैं ।

स्नातक होने वाले छात्र जिनकी मास्को में पढ़ाई समाप्त हो रही है, अपने पतों का विनिमय कर रहे हैं।

छात्र हैं, ८०० विदेशी विशेषज्ञों ने उपाधियाँ प्राप्त कीं।

सोवियत विद्यार्थियों ने विदेशों के साथी विद्यार्थियों से अच्छे सम्बन्ध स्थापित किये हैं, उन्हें रूसी भाषा पर अधिकार प्राप्त करने में सहायता दी है, और अपने स्थानीय नगरों और अपनी जनताओं की संस्कृतियों से परिचित कराया है। विदेशी विद्यालयों ने; अपनी ओर से सार्वभौमिक समादर प्राप्त किया है। वे भली भांति अध्ययन करते हैं और वैज्ञानिक कार्यों तथा अपने सोवियत शिक्षा-मन्दिरों के अन्य कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। उनके भाग लिये बिना कोई शौकिया संगीत कार्यक्रम शायद ही कभी होता है।

इस कदर अलग-अलग भावी कार्य क्षेत्रों के युवक और युवतियों का अब एक सुखी परिवार बन गया है। वे सभी, चाहे वे रूसी हों या चीनी या चैक फ्रांसीसी या अन्य किसी जाति के, अपने देशों की जनता के लाभ के लिए रचनात्मक कार्य करने का स्वप्न देख रहे हैं, शान्ति और सुख की आशा करते हैं और उन्हें सुदृढ़ विश्वास है कि वे सारे संसार में शान्ति की रक्षा करने में समर्थ हैं। यही कारण है कि ये विद्यार्थी इतने उत्साह से युवक-गीत की ये पंक्तियाँ दोहराते हैं:

"सारे संसार की जनताओं के हेतु,
आओ संघर्ष करें न्याय के लिए,
स्थायी शांति और सद्भाव के लिए।"

विद्यार्थी को उपाधि-पत्र की प्राप्ति

उपाधि-निबन्ध तैयार करने और उसको पेश करने का तथा राजकीय परीक्षाओं का काल विद्यार्थी-जीवन में अत्यन्त दुस्साध्य होता है। किन्तु, कठिन चाहे जितना भी हो, वह शीघ्र ही समाप्त हो जाता है और उसके बाद वह सुखद घड़ी आती है, जब उसे उपाधि प्राप्त करने पर बधाइयाँ प्राप्त होती हैं और युवक को सोवियत विशेषज्ञ कहलाने में गर्व अनुभव होता है।

उपाधि-प्राप्ति की घड़ी युवक के जीवन में निर्णायक होती है। कल का विद्यार्थी अब किसी कारखाने, फैक्टरी, खान, मशीन-ट्रैक्टर केन्द्र, सामूहिक खेत, राजकीय फार्म, अस्पताल, विद्यालय आदि की समष्टि का पूर्ण सदस्य हो जाता है। इस नाजुक घड़ी में उसके लिए राज्य का संरक्षण और उसकी सहायता उतनी ही आवश्यक होती हैं जितनी कि माध्यमिक विद्यालय और संस्थान में थीं।

एक बात, जिसके लिए उसे चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है, वह है रोजगार। सोवियत संघ में सुनियोजित अर्थ-व्यवस्था के कारण हर युवक-विशेषज्ञ को जीवन में अपना स्थान प्राप्त करने और जिस काम के लिए वह प्रशिक्षित हुआ है, वैसा रोज़गार पाने का अवसर प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था के सुनियोजित स्वरूप के कारण हर विशेषज्ञ को अपने ही कार्य-क्षेत्र में, खुद अपने लिए

पूर्णतम लाभ प्राप्त करने तथा उद्योग-धन्धों, यातायात, खेती और संस्कृति के और अधिक विकास में योग देने की गारंटी प्राप्त होती है।

१९५५ में, यद्यपि उच्चतर विद्यालयों से २,५०,००० जैसी बड़ी संख्या में विशेषज्ञ निकले, लेकिन उनमें से एक भी व्यक्ति बेकार न रहा। लगभग आधे स्नातकों को उद्योगों में, २४ प्रतिशत से अधिक को कृषि में और शेष को अस्पतालों, औषधालयों, विद्यालयों, राजकीय प्रशासन के कार्यालयों आदि में काम मिल गया।

राजकीय योजना समितियाँ और मन्त्रालय, उच्चतर विद्यालयों के स्नातकों के लिए रोजगार प्राप्त करने के लिए, बहुत पहले ही, आवश्यक कार्यवाही कर लेते हैं। हर वर्ष, वसन्त तक, उच्चतर विद्यालयों को ऐसे प्रतिष्ठानों और कार्यालयों की सूची प्राप्त हो जाती है जहाँ विशेषज्ञों की आवश्यकता होती है और साथ ही, संस्थानों के बोर्ड की ओर से विद्यार्थियों को उनके भावी कार्य की रूपरेखा से परिचित करा देते हैं—फिर वह कार्य चाहे जहाँ भी मिले।

उपाधि प्राप्त करने के बाद मुझे काम करने कहाँ जाना चाहिए?

इस प्रश्न का उत्तर अधिकांशतः यह होता है: "मैं वहीं काम करने जाऊँगा जहाँ उन्हें मेरी सबसे अधिक आवश्यकता होगी।"

"मैं प्रार्थना करता हूँ कि मुझे छठी पंचवर्षीय योजना के किसी निर्माण-स्थल पर भेजा जाय।" "मैं परती और नौतोड़ ज़मीन के क्षेत्रों में काम करना चाहूँगा।"—अनेक युवक-विशेषज्ञों की प्रार्थनाओं की यही विशिष्टता होती है। सभी स्नातकों की आकांक्षा होती है कि समाजवादी निर्माण के महत्त्वपूर्ण क्षेत्र में उन्हें ही भेजा जाय। उनका देश विशाल है, हर जगह रचनात्मक कार्य उमड़ रहा है, और कुशल कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता है। उन्हें कहीं भी भेजा जाय, युवक-विशेषज्ञों को निश्चय ही दिलचस्प काम अपनी प्रतीक्षा करता मिलेगा।

वी० आई० उल्यानोव (लेनिन) के नाम पर नामांकित लेनिनग्राद विद्युत्-प्राविधिक संस्थान ने हाल में ५७६ स्नातकों को, जिन्होंने

सफलतापूर्वक उपाधि प्राप्त की, सोवियत संघ के कोने-कोने में विभिन्न प्रतिष्ठानों के लिए भेजा। ये युवक-इंजीनियर कोम्सोमोल्सक-ऑन-आमूर, रोस्तोव ऑन-दोन, स्तालिनग्राद, क्यूबिशेव और सारातोव में स्थित रेडियो-प्राविधिक, धातुशोधक, विद्युत्-प्राविधिक, रासायनिक तथा अन्य प्रतिष्ठानों में काम करने गये। कुछ स्नातकों को तो यूराल्स तथा साइबेरिया में और ध्रुवी चक्र से आगे के क्षेत्रों में काम करना है।

युवक-विशेषज्ञों को काम पर भेजने की विधि क्या है?

परीक्षोत्तीर्ण होने के लगभग तीन महीने पहले हर उच्चतर विद्यालय में, युवक-विशेषज्ञों के लिए काम खोजने के लिए, एक विशेष कमेटी कायम की जाती है। इसमें संस्थान का संचालक, विभागीय अध्यक्ष, विद्यालय के सामाजिक संगठनों का एक प्रतिनिधि और जिन मन्त्रालयों से स्नातकों के लिए काम मिलना है, उनके प्रतिनिधि होते हैं। युवक-विशेषज्ञों के लिए उनका काम निश्चित करने में, यह कमेटी उनकी विशेष योग्यता के विषय, व्यक्तिगत दिलचस्पी, स्वास्थ्य की स्थिति, पारिवारिक सम्बन्धों तथा उनकी व्यक्तिगत इच्छाओं का ध्यान रखती है।

रोजगार प्रस्तावित करते हुए, यह कमेटी स्नातकों को उनके भावी ओहदे, तनख्वाह सम्बन्धित प्रतिष्ठान से किस प्रकार का मकान उन्हें मिलेगा, आदि की सूचना देती है।

स्नातकों की रज़ामन्दी से, कुछ मामलों में, यह कमेटी उन्हें अपने लिए स्वयं काम खोजने की छूट दे देती है या ऐसी जगह के प्रतिष्ठानों में काम करने भेजती है जहाँ उनके परिवार या रिश्तेदार रहते हों। यह छूट पंगु-स्नातकों को या ऐसे युवक-युवतियों को, जिनके माता-पिता पंगु हों या अन्य किसी कारण देश के अन्य भागों में उसके साथ न जा सकते हों, या नन्हे बच्चों वाली माताओं, आदि को मिलती है।

चुने गए प्रतिष्ठान में पहली बार काम शुरू करने से पहले सभी स्नातकों को तनख्वाह-समेत एक महीने की छुट्टी मिलती है—इसमें यह विचार नहीं किया जाता कि उन्होंने इसके पहले कब छुट्टियाँ मनाई थीं।

अगर युवक-विशेषज्ञ को किसी अन्य ज़िले में जाना पड़ता है तो उसके भावी प्रतिष्ठान के प्रबन्धक न सिर्फ़ उसको और उसके परिवार को मार्ग-व्यय देने के लिए बाध्य होते हैं, बल्कि सामान लाने के यातायात का खर्चा भी देते हैं। इसके अलावा उसे विशेष सफ़र-भत्ता तथा नये घर की व्यवस्था के लिए भी कुछ धन दिया जाता है।

अपने स्नातकों को जीवन-यापन में लगाकर उच्चतर विद्यालय उन्हें भूल नहीं जाते। अधिकांश संस्थाओं में, उनके साथ बराबर सम्पर्क स्थापित रखने की परम्परा बन गई है। चेल्याबिन्स्क क्षेत्र के त्रोइत्स्क पशु-चिकित्सा संस्थान के मुख्य भवन के बरामदे में टँगे हुए सोवियत संघ के एक बड़े नक्शे पर उन स्थानों के नाम के नीचे लाल निशान बना दिये गए हैं, जहाँ उसके स्नातक काम कर रहे हैं। उनमें से कुछ स्नातक साइबेरिया में काम कर रहे हैं तो कुछ सुदूरपूर्व में; कुछ अन्य स्नातक सखालिन और कज़ाकस्तान में काम करते हैं कुछ अन्य मध्य एशिया और उत्तरी भागों में। इस संस्थान ने पिछले वर्ष अपना २५वाँ उपाधि-उत्सव मनाया। उसके अनेक भूतपूर्व विद्यार्थी, जो अब पशु-चिकित्सक हैं, आज तक अपने शिक्षा-मन्दिर से सम्पर्क बनाये हैं।

पुरानी परम्परा के अनुसार, देश के विभिन्न भागों में काम करने वाले युवक-विशेषज्ञ, सहायता और सलाह-मशविरे के लिए अपने पुराने विश्व-विद्यालय के पास भी आवेदन-पत्र भेजते हैं। वे, अपनी ओर से, विशेषज्ञों के प्रशिक्षण में सुधार करने के लिए अत्यन्त अमूल्य परामर्श देते हैं। इसके अतिरिक्त, स्नातकों और उनके भूतपूर्व अध्यापकों, शिक्षकों और सहपाठियों के परम्परागत सम्मेलनों द्वारा भी अनुभवों के विचार-विनिमय की सुविधा मिलती है। एक ऐसा सम्मेलन जनवरी, १९५६ में ताशकंद के विदेशी भाषा-शिक्षण-संस्थान में हुआ था। उस दिन संस्थान में जो अतिथि आये थे, उनका रूसी, अँग्रेज़ी, फ्रांसीसी और जर्मन-भाषाओं में बड़े-बड़े अक्षरों से आलेखित 'स्वागतम्' द्वारा अभिनन्दन किया गया। उज़बेकिस्तान के विद्यालयों और विश्वविद्यालयों

में काम करने वाले युवक-अध्यापक अपने सहपाठियों और प्राध्यापकों से भेंट करने ताशकंद आये थे। संस्थान के बोर्ड के तत्वावधान में उचित संस्कारपूर्वक यह सम्मेलन सम्पन्न हुआ। अनुभवों का आदान-प्रदान करते हुए, संस्थान के अध्यापकों ने भाषाएँ सिखाने की पद्धति में सुधार करने के लिए सलाहें और सुझाव दिये और संस्थान के स्नातकों ने अपनी सफलताओं और असफलताओं के विषय में बताया और अपने पुराने विद्यालय की ऐसी कमियों पर प्रकाश डाला जो उन्हें काम के दौरान में विदित हुई थीं।

अजोवो-चरनोमोर्स्की कृषि-संस्थान के अध्यापक और शिक्षक अपने पुराने स्नातकों के सुझावों पर ध्यानपूर्वक कान देते हैं। युवक-विशेषज्ञ अपने शिक्षा-मन्दिर को, अपने अध्यापकों और सहपाठियों को, कभी नहीं भूलते। जब कठिनाई आ पड़ती है तो कल के विद्यार्थी सलाह लेने के लिए, लिखकर पूछ लेने में कभी नहीं चूकते और यह भी कम नहीं होता कि जब उन्हें किसी कठिनाई का सामना करना पड़ता है और ऐसी समस्याएँ हल करनी पड़ती हैं, जिनके लिए वे तैयार नहीं किये गए थे, तो वे शिकायतें भी उठाते हैं।

युवक-विशेषज्ञों की प्रार्थनाएँ और सुझाव, संस्थान के विद्वत्समाज के सामने विचारार्थ उपस्थित किये जाते हैं।

इस प्रकार अपने पुराने स्नातकों से सहयोग कर और व्यावहारिक समस्याओं और उत्पादन की आवश्यकताओं के साथ क़दम मिलाते हुए, उच्चतर विद्यालय अपनी शिक्षा-पद्धति में और अपने यहाँ प्रशिक्षित विशेषज्ञों के स्तर में निरन्तर सुधार करते रहते हैं।

उच्चतर विद्यालयों से उत्तीर्ण सोवियत युवक-स्नातकों की संख्या हर वर्ष बढ़ती जा रही है। युवक-इंजीनियरों, कृषि-विशेषज्ञों, डॉक्टरों और अध्यापकों के सामने रचनात्मक कुशलता के नये-नये द्वार खुल जाते हैं।

सृजन, निर्माण और अनुसन्धान के काम को सभी युवक-विशेषज्ञ सोवियत-मातृभूमि के प्रति अपना कर्तव्य समझते हैं और इन कर्त्तव्यों के पालन में जीवन का वास्तविक आनन्द अनुभव करते हैं।